वर्ष-12 , अंक-12 — प्रयागराज, रविवार 24 मार्च 2024 से शनिवार 30 मार्च 2024 तक — पृष्ठ- 8 मूल्य: 3 रूपये

TM

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

हिन्दी साप्ताहिक

आधुनिक समाचार नेटवर्क

Download From Google Play Adhunik Samachar

संक्षिप्त समाचार

मंगलागिरी सीट से लड़ेंगे नायडू के बेटे नारा लोकेश, छह पूर्व मुख्यमंत्रियों के बेटे चुनावी मैदान में

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

अमरावती। आंध्र प्रदेश के छह पूर्व मुख्यमंत्रियों के बेटे राज्य में विधानसभा चुनाव लड़ेंगे। पुलिवेंदुला निर्वाचन क्षेत्र से मुख्यमंत्री वाईएस

जगन मोहन रेड्डी चुनाव लड़ रहे हैं। वह पूर्व मुख्यमंत्री वाईएस राजशेखर रेड्डी के बेटे हैं। वाईएसआर परिवार का गढ़ माने जाने वाले पुलिवेंदुला निर्वाचन क्षेत्र का राजशेखर रेड्डी ने 1978 से 2009 के बीच छह बार प्रतिनिधित्व किया था। तीन बार मुख्यमंत्री रहे और तेदेपा के प्रमुख एन चंद्रबाबू नायडू के बेटे नारा लोकेश मंगलागिरी सीट से दूसरी बार अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। 2019 के चुनाव में वह इस सीट से हार गए थे। तेलुगु अभिनेता और हिंदूपुर से मौजूदा विधायक एन बालकृष्ण एनटीआर के बेटे हैं। वह एक बार फिर हिंदूपुर निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे हैं। तीन बार मुख्यमंत्री रहे और तेदेपा के प्रमुख एन चंद्रबाबू नायडू के बेटे नारा लोकेश मंगलागिरी सीट से दूसरी बार अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। 2019 के चुनाव में वह इस सीट से हार गए थे। तेलुगु अभिनेता और हिंदूपुर से मौजूदा विधायक एन बालकृष्ण एनटीआर के बेटे हैं। वह एक बार फिर हिंदूपुर निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे हैं। तेनाली निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे जनसेना नेता एन मनोहर पूर्व मुख्यमंत्री एन भास्कर राव के बेटे हैं। पूर्व मुख्यमंत्री एन जनार्दन रेड्डी के बेटे एन रामकुमार रेड्डी वेंकटगिरी निर्वाचन क्षेत्र से वाईएसआरसीपी के टिकट पर चुनाव लड़ रहे हैं। एक अन्य पूर्व मुख्यमंत्री के विजय भास्कर रेड्डी के बेटे के सूर्य प्रकाश रेड्डी धोने विधानसभा सीट से तेदेपा के टिकट पर अपनी किस्मत आजमाएंगे।

भारत के 21वीं सदी का पुष्पक विमान लॉन्च कर्नाटक के एयरोनॉटिकल टेस्ट रेंज से भरी उड़ान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली।त्रेता युग के बाद अब 21वीं सदी में पुष्पक विमान की चर्चा एक बार फिर शुरू हो गई है। दरअसल, इसरो ने आज पुष्पक विमान (आरएलवी-टीडी) की सफल लॉन्चिंग की है। इसरो ने आज पुष्पक विमान सफलतापूर्वक पूरा किया। इसे री-यूजेबल लॉन्च व्हीकल से लॉन्च किया गया जो एक बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है।लॉन्चिंग के बाद विमान ने सफल लैंडिंग भी की। इसरो ने आज सुबह 7 बजे कर्नाटक के चित्रदुर्ग स्थित एयरोनॉटिकल टेस्ट रेंज (एटीआर)

(आरएलवी-टीडी) की सफल लॉन्चिंग की है। लॉन्चिंग के बाद विमान ने सफल लैंडिंग भी की। इसरो ने आज सुबह 7 बजे कर्नाटक के चित्रदुर्ग स्थित एयरोनॉटिकल टेस्ट रेंज (एटीआर) में आयोजित इस परीक्षण को सफलतापूर्वक पूरा किया। इसे री-यूजेबल लॉन्च व्हीकल से लॉन्च किया गया जो एक बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है।लॉन्चिंग के बाद विमान ने सफल लैंडिंग भी की। इसरो ने आज सुबह 7 बजे कर्नाटक के चित्रदुर्ग स्थित एयरोनॉटिकल टेस्ट रेंज (एटीआर) में आयोजित इस परीक्षण को सफलतापूर्वक पूरा किया। आरएलवी लेक्स-02 लैंडिंग प्रयोग के माध्यम से पुनः प्रयोज्य प्रक्षेपण यान (आरएलवी) प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है।

पीएम मोदी भूटान के दो दिवसीय दौरे पर रवाना, कहा- प्रधानमंत्री शेरिंग टोबगे से बातचीत के लिए उत्सुक हूं

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज भूटान दौरे के लिए दिल्ली से रवाना हो गए है। वह 22 से 23 मार्च तक पड़ोसी देश रहेंगे। दरअसल, पारो हवाई अड्डे पर चल रही खराब मौसम की स्थिति के कारण पीएम मोदी की भूटान यात्रा 21 मार्च को स्थगित कर दी गई थी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आज भूटान की राजकीय यात्रा पर है। इससे पहले खराब मौसम के कारण उनकी यात्रा स्थगित कर दी गई थी। यह जानकारी विदेश मंत्रालय ने बुधवार को दी। भारत सरकार की पड़ोसी प्रथम नीति के तहत पीएम मोदी 21-22 मार्च को भूटान जाने वाले थे। बता दें कि भूटान के प्रधानमंत्री टोबगे पिछले सप्ताह गुरुवार से भारत की पांच दिवसीय यात्रा पर थे।यात्रा के दौरान पीएम मोदी द्विपक्षीय और क्षेत्रीय मुद्दों पर वार्ता कर सकते है। इससे पहले भूटानी समकक्ष दाशो शेरिंग तोबगे भी 14-18 मार्च तक भारत दौरे पर आए थे। भूटान पहुंचने से

पहले पीएम मोदी के स्वागत में पारो हवाई अड्डे पर तैयारियां की गई है। पीएम मोदी और भूटानी समकक्ष दाशो शेरिंग तोबगे की तस्वीरें लगी हैं। पीएम मोदी ने भूटान दौरे को लेकर एक पोस्ट भी साझा किया है। अपने सोशल मीडियाें (पूर्व में ट्विटर) पर पीएम मोदी ने लिखा 'मैं भारत-भूटान साझेदारी को और मजबूत करने के उद्देश्य से विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लूंगा। मैं भूटान के महामहिम राजा, महामहिम चतुर्थ ड्रुक ग्यालपो और प्रधानमंत्री के साथ बातचीत के लिए उत्सुक हूं।' भूटान के प्रधानमंत्री टोबगे पिछले सप्ताह गुरुवार से भारत की पांच दिवसीय यात्रा पर थे। जनवरी में प्रधानमंत्री का पदभार संभालने के बाद यह उनकी पहली विदेश यात्रा थी। अपनी यात्रा के दौरान उन्हों ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु और प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात की थी। उन्होंने विभिन्न उद्योगों के प्रमुखों के साथ बैठकें करने के अलावा कई अन्य कार्यक्रमों में शिरकत की थी। भूटान के प्रधानमंत्री दाशो शेरिंग टोबगे 14-18 मार्च तक भारत की आधिकारिक यात्रा पर थे।

आइएस मॉड्यूल मामले में तीन आरोपितों के खिलाफ आरोपपत्र दायर,एनआईए ने पिछले साल दर्ज किया था मामला

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने आतंकी संगठन आइएस के मॉड्यूल मामले में गुरुवार को तीन आरोपितों के खिलाफ आरोपपत्र दायर किया।

एनआईए की विशेष अदालत पटियाला हाउस में आरोपपत्र दायर किया गया। आरोपितों पर आईएस मॉड्यूल के माध्यम से आईएस के लिए विस्फोटक बनाने, भर्ती करने, धन जुटाने, साजिश रचने के आरोप लगाए गए हैं। राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने आतंकी संगठन आइएस के मॉड्यूल मामले में गुरुवार को तीन आरोपितों के खिलाफ आरोपपत्र दायर किया। एनआईए की विशेष अदालत पटियाला हाउस में आरोपपत्र दायर किया गया। आरोपितों पर आईएस मॉड्यूल के माध्यम से आईएस के लिए विस्फोटक बनाने भर्ती करने धन जुटाने साजिश रचने के आरोप लगाए गए हैं। एनआईए ने पिछले साल छह नवंबर को मामला दर्ज किया था। एनआईए ने बयान में कहा कि आरोपितों की पहचान उत्तर प्रदेश के प्रयागराज के मोहम्मद रिजवान अशरफ, उत्तराखंड के देहरादून के मोहम्मद अरशद वारसी और झारखंड के हजारीबाग के मोहम्मद शाहनवाज आलम के रूप में हुई है। तीनों आरोपित आइएस के भारत विरोधी एजेंडे को बढ़ावा देने में शामिल थे। महाराष्ट्र आइएस आतंकी मॉड्यूल की जांच के दौरान एनआईए ने आईएस द्वारा प्रकाशित वायस आफ हिंद, खिलाफत जैसी पत्रिकाओं के साथ-साथ विस्फोटकों के निर्माण और आईईडी के निर्माण से संबंधित सामग्री जब्त की थी।

अग्निकुल ने तकनीकी कारण से स्थगित की अपने पहले रॉकेट की लॉन्चिंग

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

चेन्नई। स्टार्टअप कंपनी अग्निकुल कॉसमॉस ने तकनीकी समस्या के कारण अपने पहले राकेट की लॉन्चिंग को स्थगित कर दिया है। कंपनी ने गुरुवार को इंटरनेट मीडिया पर पोस्ट कर लॉन्चिंग स्थगित किए जाने की जानकारी दी। स्टार्टअप कंपनी अग्निकुल कॉसमॉस ने तकनीकी समस्या के कारण अपने पहले राकेट की लॉन्चिंग को स्थगित कर दिया है। कंपनी ने गुरुवार को इंटरनेट मीडिया पर पोस्ट कर लॉन्चिंग स्थगित किए जाने की जानकारी दी। मिशन अग्निबाण एसओआरटीईडी (सब आर्बिटल टेकनेलाजी डिमान्स्ट्रेटर) को 22 मार्च को सुबह सात बजे आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा में इसरो परिसर में स्थित अग्निकुल के प्राइवेट लांच पैड से लांच करने की योजना थी। मिशन 'अग्निबाण एसओआरटीईडी' (सब आर्बिटल टेकनेलाजी डिमान्स्ट्रेटर) को 22 मार्च को सुबह सात बजे आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा में इसरो परिसर में स्थित अग्निकुल के प्राइवेट लांच पैड से लांच करने की योजना थी। प्रेस सूचना ब्यूरो की ओर से बताया गया है कि लांच की नई तारीख की घोषणा बाद में की जाएगी। इस राकेट में दुनिया का पहला 3डी-प्रिंटेड सेमी-क्रायोजेनिक राकेट इंजन है। की स्काईरूट एयरोस्पेस 2022 में अपने पहले राकेट विक्रम-एस की लॉन्चिंग की थी। स्काईरूट ऐसा करने वाली देश की पहली प्राइवेट स्टार्टअप कंपनी बन गई थी।

कई सबूतों के आधार पर हुई सीएम केजरीवाल की गिरफ्तारी मुख्य चार्जशीट मे ईडी ने किसके बयान का दे दिया हवाला

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की आबकारी नीति घोटाले में सीधी संलिप्तता के कई सुबूत ईडी अदालत के समक्ष पेश कर चुकी है। इस मामले में ईडी एक मुख्य चार्जशीट के साथ पांच पूरक चार्जशीट दाखिल कर चुकी है। इन सभी चार्जशीट में ईडी पूरे घोटाले में आम आदमी पार्टी (आप) और उसके प्रमुख अरविंद केजरीवाल की सीधी संलिप्तता के बारे में बताती रही है। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की आबकारी नीति घोटाले में सीधी संलिप्तता के कई सुबूत ईडी अदालत के समक्ष पेश कर चुकी है। इस मामले में ईडी एक मुख्य चार्जशीट के साथ पांच पूरक चार्जशीट दाखिल कर चुकी है। इन सभी चार्जशीट में ईडी पूरे घोटाले में आम आदमी पार्टी (आप) और उसके प्रमुख अरविंद केजरीवाल की सीधी संलिप्तता के बारे में बताती रही है। 26 नवंबर 2022 को दाखिल मुख्य चार्जशीट में ईडी ने इंडो स्प्रिट के मालिक और घोटाले के आरोपित समीर महेंद्रू के बयान का हवाला देते हुए पूरे घोटाले में अरविंद केजरीवाल की सीधी संलिप्तता का संकेत दिया था। ईडी को दिये बयान में समीर महेंद्रू ने बताया था कि दिल्ली की नई आबकारी नीति के तहत कारोबार में आने से

को केजरीवाल का बेहद करीबी बताया था। इसके अलावा दिल्ली के उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के खिलाफ दाखिल पूरक चार्जशीट में भी ईडी ने अरविंद केजरीवाल की घोटाले में सीधी संलिप्तता का दावा किया था।चार्जशीट के अनुसार, सिसोदिया के निजी सचिव सी. अरविंद ने ईडी को दिये बयान में बताया था कि दिल्ली आबकारी नीति में होलसेलर को 12 प्रतिशत का कमीशन देने की चर्चा कहीं नहीं हुई थी। पहली बार उन्हें मुख्यमंत्री केजरीवाल के घर पर बुलाया गया था, जहां सिसोदिया और सत्येंद्र जैन के साथ ही केजरीवाल खुद भी मौजूद थे। वहीं पर सिसोदिया ने एक नोट दिया और उसके आधार पर दिल्ली की आबकारी नीति तैयार करने का निर्देश दिया। इसी नोट पर पहली बार होलसेलर को 12 प्रतिशत कमीशन की बात थी।इसके बाद शनिवार को के. कविता की हिरासत की मांग करते हुए ईडी ने दिल्ली आबकारी नीति घोटाले का मास्टरमाइंड मुख्यमंत्री केजरीवाल, तत्कालीन उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया और के. कविता को बताया। ईडी ने इस सिलसिले में वाईएसआर कांग्रेस के सांसद मगुंटा श्रीनिवासुलु रेड्डी के बयान का हवाला दिया।ईडी के अनुसार, रेड्डी ने मजिस्ट्रेट के सामने आईपीसी की धारा-164 के तहत दर्ज कराये गए अपने बयान में 16 मार्च 2021 की शाम को 4.30 बजे अरविंद केजरीवाल से उनके दफ्तर में मुलाकात की बात स्वीकार की है। इस मुलाकात में अरविंद केजरीवाल ने खुद रेड्डी को के. कविता से दिल्ली में शराब के कारोबार के बारे में बातचीत होने की जानकारी दी। रेड्डी के अनुसार, अरविंद केजरीवाल के निर्देश के बाद ही उन्होंने के. कविता के साथ मुलाकात कर शराब कारोबार की बातचीत शुरू की थी।

हैती से भारतीयों को सुरक्षित निकालने के लिए ऑपरेशन इंद्रावती शुरू, अब तक इतने लोगों को निकाला गया बाहर

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने गुरुवार को कहा कि भारत ने हैती से अपने नागरिकों को सुरक्षित निकालने के लिए ऑपरेशन इंद्रावती

शुरू किया है। कहा कि भारत सरकार विदेश में अपने नागरिकों की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। यह कदम भारत के उस बयान के कुछ दिनों बाद उठाया गया है जिसमें कहा गया था कि वह हैती में बिगड़ती कानून व्यवस्था के मद्देनजर अपने 90 नागरिकों को निकालने पर विचार कर रहा है। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा कि भारत ने हैती से अपने नागरिकों को सुरक्षित निकालने के लिए ऑपरेशन इंद्रावती शुरू किया है।भारत सरकार विदेश में अपने नागरिकों की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। यह कदम भारत के उस बयान के कुछ दिनों बाद उठाया गया है जिसमें कहा गया था कि वह हैती में बिगड़ती कानून व्यवस्था के मद्देनजर अपने 90 नागरिकों को निकालने पर विचार कर रहा है। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने एक्स पर पोस्ट किया, भारत ने हैती से अपने नागरिकों को निकालने के लिए ऑपरेशन इंद्रावती शुरू किया है। आज 12 भारतीयों को निकाला गया। मदद करने के लिए डोमिनिकन गणराज्य की सरकार को धन्यवाद। जयशंकर ने अपने पोस्ट के साथ एक तस्वीर भी साझा की। हैती में भारत का दूतावास नहीं है और देश की स्थिति पर डोमिनिकन गणराज्य की राजधानी सैंटो डोमिंगो स्थित भारतीय मिशन के माध्यम से निगरानी रखी जा रही है।

जल्द अंतरिक्ष यात्री की भूमिका निभाएंगे वैज्ञानिक', मानव अंतरिक्ष कार्यक्रम पर क्या बोले इसरो प्रमुख

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नागपुर। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष एस. सोमनाथ ने गुरुवार को कहा कि इस समय देश के

अंतरिक्ष यात्री भारतीय वायुसेना से हैं, लेकिन बहुत जल्द विज्ञानी भी अंतरिक्ष यात्री की भूमिका निभाएंगे। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष एस. सोमनाथ ने गुरुवार को कहा कि इस समय देश के अंतरिक्ष यात्री भारतीय वायुसेना से है लेकिन बहुत जल्द विज्ञानी भी अंतरिक्ष यात्री की भूमिका निभाएंगे। उन्होंने कहा कि कहा कि आज अंतरिक्ष यात्री भारतीय वायुसेना से आ रहे हैं। वे पायलट हैं। जब हम निरंतर तरीके से मानव अंतरिक्ष कार्यक्रम शुरू करेंगे तो हमें अनुसंधान विज्ञानियों की आवश्यकता होगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 27 फरवरी को गगनयान मिशन पर जाने वाले चारों यात्रियों के नाम घोषित किए थे। इनमें ग्रुप कैप्टन प्रशांत बालकृष्णन नायर, अंगद प्रताप, अजीत कृष्णन और विंग कमांडर शुभांशु शुक्ला शामिल हैं। चारों वायुसेना से हैं। अंतरिक्ष यात्री बनने के लिए योग्यताओं पर प्रश्न का उत्तर देते हुए सोमनाथ ने कहा कि आज अंतरिक्ष यात्री भारतीय वायुसेना से आ रहे हैं। वे पायलट हैं। जब हम निरंतर तरीके से मानव अंतरिक्ष कार्यक्रम शुरू करेंगे, तो हमें अनुसंधान विज्ञानियों की आवश्यकता होगी।

अरुण यादव गुना और कांतिलाल भूरिया की रतलाम से उम्मीदवारी पर मुहर, जल्द जारी होगी कांग्रेस की औपचारिक सूची

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। कांग्रेस की केंद्रीय चुनाव समिति ने गुरुवार को यहां बैठक कर पार्टी प्रत्याशियों के नामों पर मंथन किया। इसमें मध्य प्रदेश की राजगढ़ लोकसभा सीट से वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह के नाम पर मुहर लगा दी गई। बैठक में पार्टी की उत्तर प्रदेश इकाई ने कहा कि अमेठी और रायबरेली के लोग चाहते हैं कि गांधी परिवार के सदस्य वहां से चुनाव लड़ें। कांग्रेस की केंद्रीय चुनाव समिति ने गुरुवार को यहां बैठक कर पार्टी प्रत्याशियों के नामों पर मंथन किया। इसमें मध्य प्रदेश की राजगढ़ लोकसभा सीट से वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह के नाम पर मुहर लगा दी गई। समिति ने पहली बार उत्तर प्रदेश के प्रत्याशियों पर चर्चा की। संभावना है कि राहुल गांधी केरल की अपनी घोषित सीट वायनाड के अलावा अमेठी से भी चुनाव लड़ सकते हैं।

महुआ मोइत्रा की बढ़ी मुश्किलें, सीबीआइ ने दर्ज की प्राथमिकी; लोकपाल ने दिए थे जांच के आदेश

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। पैसे लेकर प्रशन पूछने के मामले में सीबीआइ ने गुरुवार को तृणमूल कांग्रेस की पूर्व सांसद महुआ मोइत्रा के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की। अधिकारियों ने कहा कि लोकपाल के निर्देश पर यह कार्रवाई की गई है।पैसे लेकर प्रशन पूछने के मामले में सीबीआइ ने गुरुवार को तृणमूल कांग्रेस की पूर्व सांसद महुआ मोइत्रा के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की। अधिकारियों ने कहा कि लोकपाल के निर्देश पर यह कार्रवाई की गई है। लोकपाल ने महुआ के खिलाफ भाजपा के लोकसभा सदस्य निशिकांत दुबे द्वारा लगाए गए आरोपों पर सीबीआइ को निर्देश जारी किए हैं। लोकपाल ने महुआ के खिलाफ भाजपा के लोकसभा सदस्य निशिकांत दुबे द्वारा लगाए गए आरोपों पर सीबीआइ को निर्देश जारी किए हैं। लोकपाल ने पाया कि आरोप बेहद गंभीर प्रकृति हैं। इसलिए इस मामले में सच्चाई का पता लगाने के लिए गहन जांच की आवश्यकता है। लोकपाल ने सीबीआइ को इस मामले में शिकायतों के सभी पहलुओं की जांच कर छह महीने में रिपोर्ट देने को कहा है। लोकसभा ने पिछले साल दिसंबर में अनैतिक आचरण के लिए महुआ को निष्कासित कर दिया था। निशिकांत दुबे ने अपनी शिकायत में महुआ पर कारोबारी हीरानंदानी से महंगे गिफ्ट और पैसे लेकर लोकसभा में सवाल पूछने का आरोप लगाया था। महुआ ने आरोपों से इन्कार किया है।

डाक पंजीयन नं. AD -99/2024-2026 - website:www.aadhuniksamachar.com – E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com आधुनिक समाचार

प्रयागराज एक्सप्रेस और अंबेडकर नगर एक्सप्रेस में उठा धुंआ

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। प्रयागराज से नई दिल्ली जा रही प्रयागराज एक्सप्रेस में शुक्रवार को अलीगढ़ स्टेशन के पास अचानक एसी प्रथम श्रेणी कोच में धुआं निकलने लगा। इससे हड़कंप मच गया। आनन-फानन में ट्रेन को रोका गया।-जब चेकिंग शुरू की गई तो ऐसी पैनल में एक चूहा मिला, जिसके कारण धुआं निकलने लगा था। चेकिंग के बाद ट्रेन को नई दिल्ली रवाना किया गया। घटना सुबह में लगभग 4.22 बजे की है। वहीं प्रयागराज से अंबेडकर नगर के बीच चलने वाली अंबेडकर नगर एक्सप्रेस में गुरुवार की देर रात ब्रेक बाइंडिंग की घटना हुई। ब्रेक बाइंडिंग होने से पहियों के बीच से धुआं व चिंगारी निकलने लगी। घटना शंकरगढ़ रेलवे स्टेशन के नजदीक हुई। यात्रियों के शोर मचाने पर ट्रेन को रोका गया। तकनीकी टीम ने निरीक्षण किया और ब्रेक बाइंडिंग को ठंडा किया गया। इसके बाद ट्रेन आगे रवाना की गई।

डीसीपी यमुनानगर श्रद्धा नरेन्द्र पाण्डेय ने की जनसुनवाई

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। डीसीपी यमुनानगर श्रद्धा नरेन्द्र पाण्डेय ने की जनसुनवाई पुलिस कार्यालय में किए जनसुनवाई यमुनानगर से आए फरियादियों की डीसीपी ने सुनी समस्या समस्या का निस्तारण करने के लिए संबंधित प्रभारी को दिए आदेश।

उत्तर प्रदेश में भाजपा ने बुर्के के जरिये होने वाले फर्जी मतदान को रोकने के लिए खुद से भी अपनी तैयारी की

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा सभी पर रखेगा नज़र यूपी भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा ने मुस्लिम महिला वोटर के साथ साथ अन्य की जांच के लिए पोलिंग एजेंट में अल्पसंख्यक मोर्चा की महिला कार्यकर्ता को भी अपनी कमिटी में रखेगी जो हर बूथ पर तैनात रहेगी यूपी के मुस्लिम आबादी वाले बूथों पर भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा यूपी की मुस्लिम बूथ कमिटी मेंबर रहेंगी तैनात हर बूथ पर उसी कमिटी मेंबर को तैनात किया जाएगा जो उसी मोहल्ले का हो बुर्का पहनकर फर्जी वोट डालने वालो को चिन्हित करके संबंधित अधिकारियों को अवगत कराएगी मुस्लिम बूथ कमिटी लंग कमिटी में अल्पसंख्यक मोर्चा के पदाधिकारी भी शामिल किए जाएंगे बुर्के की आड़ में फर्जी मतदान कराने की शिकायत भी चुनाव आयोग से भाजपा कर चुकी है पहले चरण से किया जाएगा प्रयोग।

नैनी विकास परिषद का प्रतिनिधि मंडल नगर निगम नैनी के जोनल अधिकारी से मिला

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नैनी, प्रयागराज। अवंतिका विकास समिति एवं नैनी विकास परिषद का एक संयुक्त प्रतिनिधि मंडल नैनी की विभिनन मूलभूत सुविधाओं व समस्याओं के समाधान हेतु वृहस्पतिवार को नगर निगम जोन 5 के जोनल अधिकारी अखिलेश त्रिपाठी से मिला। प्रतिनिधि मंडल द्वारा ध्वस्त सफाई व्यवस्था, अस्तित्व विहीन नालियों, आवागमन में कष्टदायी सड़कों एवं अंधेरी गलियों, सड़कों, पाकी की दीन हीन दशा के सम्बन्ध में अवगत कराते हुए सुझाव सहित शिकायती पत्र देकर त्वरित समाधान कराने की मांग किया। उक्त जानकारी देते हुए संयुक्त प्रतिनिधि मंडल के संयोजक गजेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि जोनल अधिकारी ने लोगों के सुझाव व शिकायत पर त्वरित कार्रवाई हेतु आश्वासन के साथ शुक्रवार को पीडीए कॉलोनी में स्थलीय निरीक्षण करने का वादा किया है। प्रतिनिधि मंडल में डी के सिंह, आर एल डी दुबे,, शिव शंकर पांडेय, आर के श्रीवास्तव एडवोकेट, सुनील श्रीवास्तव, अनिल द्विवेदी, अंजुम नाज, सुभाष चन्द्र, बच्चा विश्वकर्मा, नयन कुशवाहा, राकेश श्रीवास्तव, सुन्दर लाल अग्रवाल, एम आर कुशवाहा, अखिलेश सिंह, विपिन सिंह, संजय सिंह आदि प्रमुख रूप से शामिल रहे।

सपा के कद्दावर नेता रेवती रमण सिंह ने कांग्रेस से मिलाया हाथ

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। अविनाश पांडेय और अजय राय ने की मुलाकातसपा से

राज्यसभा टिकट न मिलने से नाराज चल रहे कुंवर रेवती रमण सिंह कांग्रेस से हाथ मिला सकते हैं। शनिवार को पीजीआई लखनऊ में कांग्रेस के महासचिव और प्रदेश प्रभारी अविनाश पांडेय और प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने उनसे मुलाकात की। अविनाश पांडेय ने इसका फोटो भी एक्स पर शेयर किया है। करछना से आठ बार के विधायक और इलाहबाद लोकसभा क्षेत्र से दो बार सांसद और एक बार के राज्यसभा सदस्य रह चुके कुंवर रेवती रमण सिंह सपा से बढ़ती दूरियों के बीच शनिवार को कांग्रेस के नजदीक आ गए। पीजीआई में इलाज करा रहे रेवती रमण सिंह से कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव और उत्तर प्रदेश के प्रभारी अविनाश पांडेय और कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने पहुंचकर मुलाकात की और उनका कुशलक्षेम जाना। इस मुलाकात के कई मायने निकाले जा रहे हैं। माना जा रहा है कि कांग्रेस रेवती रमण सिंह के बेटे और करछना से विधायक रह चुके उज्ज्वल रमण सिंह को इलाहाबाद लोकसभा क्षेत्र से अपना उम्मीदवार बना सकती हैं। राज्यसभा में सपा से प्रत्याशी न बनाए जाने से नाराज चल रहे रेवती रमण सिंह कांग्रेस से हाथ मिला सकते हैं। गत दिनों अखिलेश यादव प्रयागराज आए थे, लेकिन उन्होंने रेवती रमण सिंह से मिलने की जहमत नहीं उठाई। पूछे जाने पर कहा था कि फिर कभी बैठकर मुलाकात कर लेंगे और सारी शिकायत दूर हो जाएगी। सपा के कद्दावर नेता माने जाने वाले कुंवर रेवती रमण सिंह सपा मुखिया मुलायम सिंह यादव के बेहद करीबी माने जाते थे। शनिवार को कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय और प्रदेश प्रभारी अविनाश पांडेय ने पीजीआई पहुंचकर रेवती रमण सिंह से मुलाकात की. इसका फोटो भी अविनाश पांडेय ने अपने ट्विट अब एक्स) पर शेयर किया है। इसके बाद से ही राजनीतिक गलियारों में हलचल तेज हो गई है।

उतरांव थाना पुलिस को मिली बड़ी कामयाबी, अफीम की अवैध खेती का किया पर्दाफाश

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। तहसील क्षेत्र के रेहथु गांव में हो रही थी अवैध खेती थानाध्यक्ष पंकज त्रिपाठी ने अफीम के पौधे नष्ट कराए पुलिस राजस्व, आबकारी विभाग की ने की कार्रवाई अफीम की अवैध खेती करने वाला किसान हुआ फरार एसीपी हंडिया पंकज लवानिया भी मौके पर रहे मौजूद।।

कानून से बच कर खेलें होली

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट की अधिवक्ता ऊषा किरण बताती है कि भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 354 और 509 उन मामलों में लगाते हैं, जहां औरत की मर्यादा और मान-सम्मान को नुकसान पहुंचाया जाता है या जोर-जबरदस्ती की जाती है। फागुन की खुमारी में होली रासायनिक रंगों से ही नहीं, कानून से भी बच कर खेलना है। बुरा न मानो होली है...कह कर जबरन किसी महिला को रंग लगाना जेल की सैर भी करवा सकता है। पानी भरे गुब्बारों का वार, होलिका दहन के लिए जबरन चंदा वसूली और अश्लील गानों पर हुड़दंग करने पर थाने में करना पड़ सकता है ।

माफिया अतीक के फाइनेंसर माशूक प्रधान समेत तीन को हाईकोर्ट से झटका, कोर्ट ने जमानत देने से किया इन्कार

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। असरौली के ग्राम प्रधान और माफिया अतीक अहमद के फाइनेंसर माशूक समेत उसके बेटे और भतीजे को हाईकोर्ट ने जमानत देने से इनकार कर दिया है। गैंगस्टर के आरोप में तीनों जेल में बंद है। माशूक पर एनकाउंटर स्पेशलिस्ट एक इंस्पेक्टर के बेटे की हत्या का आरोप है। इंस्पेक्टर के बेटे को उसने धूमनगंज में गोलियों से भून दिया था। माफिया अतीक अहमद के फाइनेंसर और कुख्यात अपराधी असरौली गांव के प्रधान माशूक उर्फ माशूक़ुद्दीन को इलाहाबाद हाईकोर्ट से बड़ा झटका लगा है। गैंगस्टर के मामले में कोर्ट ने जमानत देने से इनकार कर दिया है। बेटे शाहेजमन और भतीजे असलूब की जमानत अर्जी भी कोर्ट ने खारिज कर दी। डेढ़ दर्जन मुकदमों में आरोपी माशूक का नाम एनकाउंटर स्पेशलिस्ट इंस्पेक्टर के बेटे की हत्या में भी नाम सामने आया था। धूमनगंज में इंस्पेक्टर के बेटे की गोलियों से भूनकर हत्या कर दी थी। पूरामुफ़्ती थाना क्षेत्र के असरौली गांव के प्रधान माशूकउद्दीन का घर पीडीए ने उमेश पाल ही हत्या के बाद जमींदोज कर दिया था। वह एनकाउंटर स्पेशलिस्ट इंस्पेक्टर राम नवमी यादव के बेटे बलवंत यादव की हत्या में नामजद हुआ था। हालांकि, न्यायालय ने उसे दोषमुक्त कर दिया था लेकिन इस घटना के बाद क्षेत्र में ऐसा दबदबा बना कि आज तक उसके खिलाफ बोलने की किसी की हिम्मत नहीं होती। अकेले माशूकउद्दीन पर ही 16 संगीन मुकदमे दर्ज हैं। उसके परिवार के दस पुरुषों में नौ के खिलाफ अलग अलग थानों 52 मुकदमे चल रहे हैं।

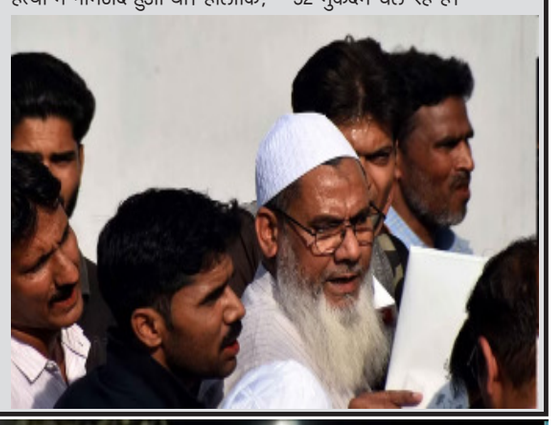

शहीदों और भगवान शिव की पिंडी के चिह्न भी समेटे है विरासत गलियारा- जानिए क्या है कहानी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

गोरखपुर। बाबू रेवती रमण दास की मानें तो शहीद सुरेंद्र सिंह और उनके परिवार के एक सदस्य को फांसी दी गई थी। उनकी समाधिस्थल आज भी आर्यनगर तिराहे पर मौजूद है। उनका दावा है कि इन्हीं शहीदों की ओर स्थापित आर्यनगर के 11 शिवलिंग मूर्ति में से एक शिवलिंग की पिंडी भी समाधिस्थल के बगल में है।शहर को करीब से जानने वाले प्रो. डॉ. कृष्ण कुमार पांडेय ने बताया कि अवध के 11 शिव मंदिरों की स्थापना की गई थी, जो एक ही आकार की पिंडी और घेरानुमा थीं। आज भी ये शिवपिंडी आर्यनगर से लेकर आस-पास के इलाकों में देखे जा सकते हैं और भक्त इनकी श्रद्धा से पूजा अर्चन भी करते

उनका दावा है कि इन्हीं शहीदों की ओर स्थापित आर्यनगर के 11 शिवलिंग मूर्ति में से एक शिवलिंग की पिंडी भी समाधिस्थल के बगल में है गोरखपुर के धर्मशाला बाजार से लेकर शहीद बंधू सिंह पार्क तक प्रस्तावित विरासत गलियारा प्राचीन काल के मंदिरों और आजादी के मतवालों की शहादत के चिह्न भी समेटे हुए है। आर्यनगर चौराहे पर संचालित मंडी के जर्जर भवन के भीतर समाधि स्थल और शिव मंदिर की पिंडी मौजूद है। हालांकि, शहर के लोग इन चिह्नों से दस्तावेजीकरण नहीं होने से अनजान है।1857 के पहले भी देश के मतवालों को अंग्रेजों ने फांसी दी थी। इन्हीं में से एक थे अमर शहीद सुरेंद्र सिंह। शहर के बाबू पुरुषोत्तम दास रईस के बेटे बाबू रेवती रमण दास की मानें तो शहीद सुरेंद्र सिंह और उनके साथ परिवार के दो सदस्यों को भी फांसी दी गई थी। उनकी समाधिस्थल आज भी आर्यनगर तिराहे पर मौजूद है। नवाब की मदद के बदले उन्होंने गोरखपुर से बहराइच तक का हिस्सा अंग्रेजों को दिया था। 1801 में गोरखपुर में पहले कलेक्टर मेजर राउट लेज थे। इनके अलावा एक कप्तान भी तैनात किए गए थे। उन्होंने बताया कि तत्कालीन समय में कलेक्टर का काम ही लगान इकट्ठा करने के साथ मजिस्ट्रेट की भूमिका में भी रहती थी। ये सजा भी देते थे। गोरखपुर का सरकारी इतिहास अंग्रेजी काल में 1801 से शुरू हुआ था। इसी के बाद अंग्रेज शासन करते हुए चुंगी और लगान के साथ अपना शासन करते चले गए। बाबू रेवती रमण दास ने बताया कि उन्होंने अपने पूर्वजों से सुना था कि आर्यनगर में सुरेंद्र सिंह स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हुआ करते थे। चूंकि, 1857 के पहले अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ने की योजना भारतीयों ने गुपचुप तरीके से शुरू कर दी थी। इसी दौरान उनके द्वारा आर्यनगर के आस-पास कुल है। उन्होंने बताया कि मुखबिरी के बाद अंग्रेजों द्वारा इनकी गिरफ्तारी की गई और आर्यनगर चौराहे पर सुरेंद्र सिंह और परिवार के एक सदस्य को फांसी दी गई थी। यह बात 1857 के पहले की है। जिस जमीन पर उन्हें फांसी दी गई, उस आराजी 109 की जमीन को बाद में सरकार ने जमींदारी में दे दी। वहां पर अंग्रेजों के समय से ही सब्जी मंडी लगने लगी। इसी मंडी और निर्माण में इस समाधिस्थल और शिव मंदिर का अतीत दबकर रह गया। उन्होंने सरकार से मांग की कि परिसर के समाधिस्थल और शिवमंदिर की पुरातत्व विभाग से जांच कराई जाए। इससे मंदिर और समाधि स्थल के अस्तित्व की कहानी जगजाहिर हो जाएगी। यहां शिव मंदिर की पिंडी खुद से बाहर आने की बात भी पूर्वजों ने बताई थी। इसी के बाद सुरेंद्र सिंह ने आस-पास 11 शिवमंदिरों की स्थापना करवाई थी। उन्होंने चौराहे का नाम शिवालय चौराहा करने की मांग की।

अनियंत्रित ट्रैक्टर पुलिया से लटका, बाणसागर नहर में बह गया ड्राइवर; तलाश जारी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

मिर्जापुर। मिर्जापुर जिले में बाणसागर नहर में चल रहे निर्माण कार्य के लिए गिट्टी गिराकर लौट रहा ट्रैक्टर अचानक अनियंत्रित होकर पुलिया से लटक गया। इस दौरान चालक और खलासी अलग-अलग दिशा में गिरे। बाणसागर नहर में गिरा ड्राइवर बह गया, जबकि चालक दूसरी ओर गिरने से बच गया। मिर्जापुर जिले के हलिया क्षेत्र के फुलियरी गांव के पास बाणसागर नहर में चल रहे निर्माण कार्य में गिट्टी उतार कर वापस लौट रही ट्रैक्टर फुलियरी पुलिया के पास अनियंत्रित हो गया। ट्रैक्टर पुल से नीचे लटक गया, जबकि ट्राली पुल पर रह गया। इस दौरान चालक व खलासी नीचे गिर गए। इस दौरान चालक बाणसागर नहर में बह गया। खलासी दूसरी तरफ गिरने से घायल हो गया। ग्रामीणों की सूचना पर हलिया पुलिस मौके पर पहुंची। नहर में बहे चालक की तलाश की जा रही

है। बाण सागर नहर को पक्का करने का काम किया जा रहा है। मड़िहान थाना क्षेत्र के जगनपुर निवासी धर्मेंद्र कोल (35) व उसी गांव निवासी हेल्पर संदीप कुमार (22) ट्रैक्टर- ट्राली पर काली गिट्टी लेकर गजेड़िया फुलियरी गांव गए थे। गिट्टी उतारने के बाद दोनों वापस लौट रहे थे कि बाणसागर नहर पर फूलयारी पुलिया के पास ट्रैक्टर अनियंत्रित हो गया। अनियंत्रित ट्रैक्टर नहर की तरफ चला गया और पुलिया पर लटक गया। जिससे चालक धर्मेंद्र नहर में गिर गया। जबकि हेल्पर संदीप कुमार पुलिया पर दूसरी ओर गिरा। जिससे वह बच गया। वहीं नहर में गिरने से चालक नहर में बह गया। बाणसागर नहर में पानी का बहाव तेज था। इस कारण चालक नहर में काफी दूर बह गया। बाणसागर नहर में पानी मेजा बांध में जा रहा था। ग्रामीणों की सूचना पर पहुंची हालिया पुलिस नहर में बहे ट्रैक्टर चालक की तलाश में जुटी हुई है। हलिया थानाध्यक्ष विष्णु प्रभा सिंह ने बताया कि गिट्टी उतार कर जा रही ट्रैक्टर अनियंत्रित हो गई। जिसके कारण चालक नहर में गिर गया।

हिस्ट्रीशीटर सोनू की लाश लेकर परिजनों ने किया चक्काजाम, आरोपियों के घर पर बुलडोजर कार्रवाई की मांग

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

वाराणसी। परिजन नाथूपुर रेलवे क्रॉसिंग पर सोनू की लाश लेकर पहुंच गए और भीषण जाम कर दिया। चक्काजाम की सूचना पर पहुंची पुलिस ने परिजनों को समझाने की कोशिश की। परिजन सोनू के नवजात बच्चे को सामने रखकर प्रदर्शन करने लगे। उन्होंने मांग की कि मौके पर जिलाधिकारी को बुलाया जाए। वाराणसी के जलालीपट्टी इलाके में बीती रात हिस्ट्रीशटर सोनू यादव (27) की हत्या के बाद उसकी लाश पोस्टमार्टम हाऊस से शुक्रवार की रात घर पहुंचाई गई। लाश देख परिजन फिर दहाड़ मारकर बिलखने लगे। थोड़ी ही देर बाद परिजन नाथूपुर रेलवे क्रॉसिंग पर सोनू की लाश लेकर पहुंच गए और भीषण जाम कर दिया। चक्काजाम की सूचना पर पहुंची पुलिस

ने परिजनों को समझाने की कोशिश की। परिजन सोनू के नवजात बच्चे को सामने रखकर प्रदर्शन करने लगे। उन्होंने मांग की कि मौके पर जिलाधिकारी को बुलाया जाए। साथ ही आरोपियों के घर पर बुलडोजर की कार्रवाई हो मां और पतने हुई बेसुध, संभालने में परिजनों का पसीना छूटा सोनू यादव की हत्या के बाद उसकी मां भुड़क्का देवी और पतने बबिता देवी की हालत बेसुधों जैसी थी। मां और पतने होश में आने पर बार-बार यही कह रहीं थी कि हे भगवान ई का अनर्थ हो गईल...? सोनू की मां और पतने को संभालने में परिजनों का पसीना छूट जा रहा था। बबिता का कहना था कि आठ माह के बच्चे को हम कैसे पालेंगे और हमारी गुजर-बसर कैसे होगी...? यही रटते हुए बबिता फिर बेसुध हो जा रही थी।

बाइक सवार को बचाने में पलटी बच्चों से भरी स्कूली बस, छात्रा व चालक घायल

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

जौनपुर। जौनपुर में स्कूल की छुट्टी होने के बाद 25 बच्चों को लेकर स्कूली बस ड्राइवर घर छोड़ने जा रहा था। अचानक जफराबाद बाईपास के पास बस गड्ढे में पलट गई। गनीमत रही कि कोई हताहत नहीं हुआ। हालांकि हादसे में ड्राइवर घायल है और एक बच्ची को मामूली चोट आई है। जौनपुर जिले के जफराबाद बाईपास पर शनिवार को छात्र छात्राओं से भरी स्कूल की बस पलट गयी।जिसमें चालक तथा एक छात्रा घायल हो गए। संयोगवश कोई बड़ी घटना नही हुई। कस्बे में स्थित काली प्रसाद इंटर कॉलेज के स्कूल की बस बच्चों को लेकर जा रही थी। बस में लगभग 25 बच्चे थे। बाईपास पर बस के आगे जा रहे बाइक सवार असंतुलित होकर लहराने लगा।बस चालक समीर उर्फ कल्लू पुत्र बाबु निवासी कगदियान बाइक सवार को बचाने में असंतुलित हो गया। बस बाईपास के

पटरी के गड्ढे में जाकर पलट गई। संयोग अच्छा रहा जहा बस पलटी वहां पर नगर पंचायत का कचरा फेंका गया था।इस लिए बस एक बार पलट कर रुक गयी।बस पलटने के बाद आसपास के लोगों ने आनन- फानन बच्चों को बाहर निकाला। डर के मारे बच्चे कांप रहे थे। उनके रोने चिल्लाने की आवाज को सुन लोग उन्हें समझाने लगे। हालांकि कक्षा नौ की छात्रा दीपाली यादव पुत्री श्यामनारायण यादव निवासी सखोई के माथे पर बहुत हल्की चोट आयी है। चालक समीर को कुछ ज्यादा चोट आई। वह अचेत था। घटना की सूचना पर थाना प्रभारी सुरेन्द्र नाथ सिंह, चौकी प्रभारी अरविंद यादव, कॉलेज के प्रबंधतंत्र के लोग तत्काल मौके पर पहुंच गए।

बनने के 24 घंटे के अंदर उखड़ने लगी सड़क, चौड़ाई कम होने का आरोप लगा ग्रामीणों ने की जांच की मांग

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

भदोही। भदोही ब्लॉक के डुड़वा कुकरौठी गांव में सड़क निर्माण में मानकों की अनदेखी को लेकर ग्रामीण बिफर पड़े। गांव में बनाई जा रही सड़क 24 घंटे के भीतर ही उखड़ने लगी। एक तरफ

कार्यदायी संस्था ने सड़क की चौड़ाई कम कर दी। वहीं दूसरी तरफ काम की गुणवत्ता इतनी खराब रही कि पैर से रगड़ने पर ही गिट्टियां उखड़ने लगी। ग्रामीण बनी सड़क की गिट्टियों को हाथ से बंटोर ले रहे थे। आक्रोशित ग्रामीणों ने सड़क की जांच की मांग की। भदोही जिले के डुड़वा कुकरौठी गांव में सड़क निर्माण के 24 घंटे के अंदर ही उखड़ने पर ग्रामीण नाराज हो गए। लोगों ने सड़क की खराब गुणवत्ता व चौड़ाई कम होने का आरोप लगाते हुए हंगामा किया। ग्रामीणों ने कहा कि कार्यदायी संस्था लोक निर्माण की ओर से सड़क का काम कराया जा रहा है। मानक सही न होने पर सड़क सही ढंग से नहीं बनाई जा रही है। गुरुवार को मार्ग का लेपन किया गया और शुक्रवार को उखड़ने लगी। ग्रामीणों ने कहा कि सरकार भ्रष्टाचार पर जीरो टोलेरेंस की बात कर रही है, लेकिन ठेकेदारों की मनमानी से सीधे उल्लंघन किया जा रहा है। ग्रामीणों ने जब सड़क में घटिया सामग्री को देखा तो वीडियो बनाकर इंटरनेट मीडिया में भी वायरल कर दी है। वायरल वीडियो में ग्रामीण पैर एवं हाथ से ही बनाई गई सड़क को उखाड़ते हुए दिखाई दे रहे है। सड़क पर उखड़ी हुई बजरी पड़ी है। ग्रामीणों का आरोप है कि सड़क में गुणवत्ता के हिसाब से घटिया सामग्री लगाई जा रही है एवं तारकोल आदि का भी सही इस्तेमाल नहीं किया जा रहा। जिलाधिकारी से मांग किया कि प्रकरण को संज्ञान में लेकर जांच कराएं। प्रदर्शन करने वालों में प्रदीप पटेल, अवधेश पटेल आदि रहे। दूसरी ओर अधिशासी अभियंता लोक निर्माण जैनूराम ने बताया कि मामला संज्ञान में है। सड़क का काम अभी चल रहा है। काम पूर्ण होने पर जांच कराई जाएगी।

दो वांछित वारंटी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

डाला सोनभद्र। स्थानीय डाला पुलिस चौकी क्षेत्र से माननीय न्यायालय के आदेश पर दो अलग-अलग मुकदमा में वांछित वारंटी दो अभियुक्तों को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया वही इस संबंध में डाला चौकी इंचार्ज राजेश कुमार सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि माननीय न्यायालय व पुलिस अधीक्षक सोनभद्र के निर्देशन में जिले में अपराध व अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान तहत माननीय न्यायालय के आदेश के क्रम में डाला पुलिस चौकी क्षेत्र से दो अलग -अलग मुकदमा में वांछित 2 वारंटी अभियुक्त कमलेश

तिवारी पुत्र गोपाल तिवारी निवासी डाला चढ़ाई व अली हसन पुत्र निजामुद्दीन निवासी सेक्टर बी चौराहा को भरण पोषण मामले में उनके घर से सोमवार की सुबह मुकदमा नंबर 824/12 एवं 280/22 के तहत गिरफ्तार कर मा. न्यायालय के समक्ष उपस्थित किया जा रहा है इस दौरान चौकी प्रभारी राजेश कुमार सिंह हे0 का0 मंजेश सिंह हे0 का0 शिवशरण बिंद शामिल रहे।

दो दिवसीय मंडल स्तरीय बालीबाल प्रतियोगिता संपन्न

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

ओबरा। खैरटिया स्थित ओम चौराहे के निकट आयोजित दो दिवसीय मंडल स्तरीय बालीबाल प्रतियोगिता का आयोजन सकुशल संपनन हुआ । जिसमे रविवार 17 मार्च को फाइनल मैच खेला गया। जिसकी टीम ग्रामीण में खैरटिया बी एवम परसोई के बीच मुकाबला हुआ । खैरटीया बी विजयी एवम परसोई टीम उपविजेता रही। शहरी टीम में चतरा एवं मुसाखाड़ टीम के बीच खेला गया मैच काफी रोमांचक रहा। इस मुकाबले में शहरी टीम में चतरा की टीम विजेता रही ।मुसाखड की टीम उपविजेता घोषित हुई ।

सम्पादकीय

यह मृत्यु झकझोरती है और समाज की चुप्पी परेशान करने वाली

बांग्लादेश में घरों में काम करने वाली एक आदिवासी किशोरी की नौवीं मंजिल से गिरकर हुई मृत्यु स्तब्ध कर देने वाली है। यह हम कैसा समाज बना रहे हैं, जिसमें विपन्न समुदाय की एक किशोरी स्कूल जाने के बजाय घरों में काम करने जाती है, और वहां शोषण के बीच उसका ऐसा त्रासद अंत होता है! जो बांग्लादेश बड़ी तेजी से कट्टरवाद की ओर झुकता चला गया है, जहां स्त्रियों की स्वतंत्रता और उदार चिंतन की जगह क्रमशः सिकुड़ती गई है, और हाल के वर्षों में आर्थिक स्थिति बेहतर होने के कारण जहां उपभोक्तावाद तेजी से बढ़ा है, वहां पिछले दिनों घरेलू काम करने वाली एक आदिवासी किशोरी प्रीति उरांव की संदेहास्पद मृत्यु ने लोगों का ध्यान खींचा है। दक्षिण एशिया में उरांव आदिवासियों की बड़ी आबादी रहती है। भारत में मुख्यतः झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और ओडिशा में इनका निवास है, तो बांग्लादेश में भी इनकी बड़ी संख्या है। वर्ष 2020 की आदमशुमारी के मुताबिक, बांग्लादेश में उरांव आदिवासियों की आबादी लगभग 2.45 लाख है। मैं यहां उरांव आदिवासियों का इतिहास नहीं बताने जा रही। मैं इस समुदाय की एक लड़की प्रीति उरांव के बारे में बता रही हूं, जिसकी दर्दनाक कहानी ने एक बार फिर जहां गरीबों की असहायता को बताया है, वहीं यह त्रासदी आदिवासी समुदाय की विपनन्ता को भी सामने लाती है। पंद्रह साल की प्रीति को स्कूल में होना चाहिए था। स्कूल न जाकर प्रीति लोगों के घर में काम क्यों करती थी? क्योंकि वह गरीब थी। उसके पिता एक चाय बागान में काम करते थे। लेकिन कम आय में गुजारा नहीं होता था, इसलिए प्रीति को लोगों के घर का कामकाज करने के लिए उसने ढाका भेज दिया था। दुनिया भर में ऐसे असंख्य मजबूर परिवार हैं, जो अपने बच्चों को काम करने के लिए भेज देते हैं। लेकिन प्रीति ढाका शहर के किसी आम घर में नहीं, चर्चित अंग्रेजी अखबार द डेली स्टार के एक संपादक के यहां काम करती थी, जिनकी स्वाभाविक ही बौद्धिक छवि थी। जो व्यक्ति अखबार में मानवाधिकार, स्त्री-पुरुष समान अधिकार और औरतों के साथ होनेवाली हिंसा के खिलाफ लिखता हो, जो हर तरह के शोषण के खिलाफ बात करता हो, उससे व्यवहारिक तौर पर भी स्त्रियों के साथ संवेदनशील व्यवहार करने की ही उम्मीद की जाती है। लेकिन पता चलता है कि उनके घर पर बाल श्रमिक काम करते थे। ऐसा क्यों था अगर बौद्धिक लोग भी अपने घर पर बच्चों से काम कराएंगे, तो समाज किससे सीखेगा कि हर बच्चे को स्कूल जाने का अधिकार है? तथ्य यह है कि पिछले साल छह अगस्त को भी काम करने वाली एक किशोरी फिरदौसी नौवीं मंजिल स्थित उस व्यक्ति के फ्लैट से नीचे कूदकर गंभीर रूप से घायल हो गई थी। अपनी जान जोखिम में डालकर वह किशोरी उतनी ऊंचाई से क्यों कूदी थी? फ्लैट में क्या हुआ था? महीनों बाद प्रीति उरांव की भी फिरदौसी की तरह अपनी जान जोखिम में डालकर नीचे कूदना पड़ा। लेकिन वह फिरदौसी की तरह भाग्यशाली नहीं थी। नीचे गिरने के बाद वह मर गई। सबसे स्तब्ध करने वाली बात यह है कि छह महीने पहले एक दुखद घटना घटने के बाद भी उस संपादक और उनके परिवारजनों ने कोई सबक नहीं लिया था। सिर्फ यही नहीं कि उनके यहां घरेलू कामगारों के शोषण का सिलसिला लगातार जारी रहा, बल्कि जिस खिड़की से फिरदौसी कूदी थी, उसमें ग्रिल लगाने या सुरक्षा की दूसरी व्यवस्था करने की जरूरत भी उस परिवार ने महसूस नहीं की। क्या उस परिवार को इसका अहसास नहीं था कि शोषण से तंग आकर काम करने वाली दूसरी लड़की भी जान बचाने के लिए कूद सकती है? या अपनी विशिष्ट पहचान या समाज में खास छवि के कारण उस परिवार को इसकी कोई परवाह नहीं थी प्रत्यक्षदर्शियों का कहना था कि प्रीति के शरीर पर जख्मों के निशान थे। कुछ लोगों का कहना है कि प्रीति की बुरी तरह पिटाई की गई होगी, यहां तक कि उसे मार डाला गया होगा, फिर ऊपर से लाश नीचे फेंक दी गई। जबकि कुछ लोगों का यह आकलन है कि भीषण पिटाई के बाद प्रीति ने जान बचाने के लिए ऊपर से छलांग लगा दी होगी। आश्वस्ति की बात यह है कि आरोपी की गिरफ्तारी हुई है। पुलिस ने इस मामले में उस घर के कुल छह लोगों को गिरफ्तार किया है। गौर करने वाली बात यह है कि काम करने वाली नौकरानियों पर अत्याचार करने के कारण आरोपी को इससे पहले भी गिरफ्तार किया गया था। लेकिन यह मामला बेहद गंभीर है। प्रीति उरांव की मृत्यु से बांग्लादेश में हलचल मच गई है, तो इसका कारण यही है। पहाड़ी छात्रों का एक संगठन न सिर्फ प्रीति के मामले में न्याय की मांग करते हुए सड़क पर उतरा, बल्कि उसका यह भी कहना है कि प्रीति के पिता को दो लाख रुपये देकर आरोपी इस मामले को रफा-दफा करना चाहता है। यह एक और उदाहरण है कि समृद्ध लोगों को अपने अन्याय का कोई अहसास नहीं होता। इसके बजाय वे कुछ पैसे देकर गरीबों का मुंह बंद कर देने पर ज्यादा भरोसा करते हैं। यह सही है कि प्रीति उरांव की मौत से जुड़ी पूरी सच्चाई अभी तक सामने नहीं आई है। या तो उसे मारकर फेंक दिया गया होगा, या फिर शोषण से मुक्ति के लिए उसने खुद जोखिम उठाया होगा। लेकिन यह तो साफ ही है कि उसे काम करते हुए शोषण का सामना करना पड़ रहा था। दूसरे देशों की तरह बांग्लादेश में भी एक समय घरेलू नौकरानियों का खूब शोषण किया जाता था।

होलिका दहन पर पूरे दिन रहेगा भद्रा का अशुभ साया, मिलेगा पूजन के लिए सिर्फ इतना समय

होलिका दहन पर किसी वृक्ष की शाखा को जमीन में गाड़ कर उसे चारों तरफ से लकड़ी कंडे उपले से घेर कर निश्चित मुहूर्त में जलाया जाता है इस बार होलिका 24 मार्च, सोमवार को किया जाएगा 24 मार्च को भद्रा करना चाहिए और यह कामना करें कि सभी के पापों का नाश हो ज्योतिषी वेद प्रकाश मिश्रा ने बताया कि पूर्णिमा की समाप्ति पर अगले दिन सूर्योदय यानी प्रतिपदा के साथ ही रंग खेला जा सकता है सूर्योदय से लेकर दोपहर राशियों के स्वामी के मुताबिक, वस्त्रों को पहनने या उन रंगों को खेलने से आपके जीवन में ग्रहों की अनुकूलता प्राप्त होगी जिनके लिए तमाम उपाय किए जाते है, वह उपाय बैठे-बैठे हो जाएंगे मात्र अपनी राशि के मुताबिक हुए होलिका दहन किया जाता है कथा के अनुसार, असुर हिरण्यकश्यप का पुत्र प्रह्लाद भगवान विष्णु का परम भक्त था, लेकिन यह बात हिरण्यकश्यप को बिल्कुल अच्छी नहीं लगती थी बालक प्रह्लाद को भगवान की भक्ति से विमुख करने का कार्य उसने अपनी बहन होलिका को सौंपा, जिसके पास वरदान था कि अगिन उसके शरीर को जला नहीं सकती भक्तराज प्रह्लाद को मारने के उद्देश्य से होलिका उन्हें अपनी गोद में लेकर अगिन में प्रविष्ट चक्र लेकर होली दहन के दिन रात्रि में शिवलिंग पर चढा दें। ऐसा करने से व्यापार और नौकरी में तरक्की मिलेगी। साथ ही व्यापार में अच्छा धनलाभ होगा। होलिका बनेंगे रुके हुए कार्य होली की रात्रि को सरसों के तेल का चौमुखी दीपक जलाकर पूजा करें व भगवान से सुख - समृद्धि की प्रार्थना करें। ऐसा करने से आपके काम बनने लगेंगे। साथ ही जीवन में सुख- शांति बनी रहेगी। होलिका की अगिन में करें नारियल अर्पित अगर

हो गई लेकिन प्रह्लाद की भक्ति के प्रताप और भगवान की कृपा के फलस्वरूप खुद होलिका ही आग में जल गई अगिन में प्रह्लाद के शरीर को कोई नुकसान नहीं हुआ तब से होली के पहले दिन होलिका दहन किया जाता है होलिका दहन की रात करें ये सिद्ध उपाय, पलटेगी आपकी किस्मत, मिलेगी नई नौकरी और चमकेगा कारोबार तंत्र शास्त्र के अनुसार, होलिका दहन की रात को करने के लिए कुछ टोटके व उपाय बताए गए हैं। इन उपायों को करने धन में वृद्धि हो सकती है धन में वृद्धि के लिए करें ये उपाय अगर आप आर्थिक तंगी से परेशान हो तो आप लोग होलिका दहन की अगिन की बची हुई राख को घर लाकर लाल कपड़े में बांध लें और फिर उसको धन रखने के स्थान जैसे अलमारी या तिजोरी में रख दें। ऐसा करने से धन में वृद्धि के योग बनेंगे। साथ ही धन आगमन के नए मार्ग बनेंगे। मनोकामना पूर्ति के लिए अगर आपका कोई कार्य रुका हुआ हो तो आप लोग होलिका दहन के समय 7 पान के पत्ते ले लें। इसके बाद होलिका दहन की 7 बार परिक्रमा करें और हर परिक्रमा करते समय 1 पत्ता होलिका दहन की अगिन में डाल दें। इस तरह 7 परिक्रमा के 7 पत्ते होलिका दहन में जाएंगे। ऐसा करने से आपकी सभी मनोकामना पूरी हो सकती है। साथ ही जीवन में संपनन्ता बनी रहेगी। कारोबार में वृद्धि के लिए करें ये उपाय यदि कारोबार या जॉब में तरक्की न हो रही हो तो 21 गोमती धन कमाने के बाद भी धन की सेविंग नहीं हो पा रही तो आप होली?का की अगिन में नारियल अर्पित करें। ऐसा करने से धन की तंगी दूर हो सकती है। साथ ही जलती होली में नारियल के साथ पान और सुपारी भी चढ़ाएं। ऐसा करने से धन में वृद्धि होने की मान्यता है। नई बहू ससुराल में क्यों नहीं मनाती पहली होली? जानें इसके पीछे का कारण होलिका एक दिव्य वस्त्र को ओढ़कर प्रह्लाद को जलाने के लिए आग में जा बैठी थी, जैसे ही प्रह्लाद ने भगवान विष्णु के नाम का जाप किया, होलिका का अगिन्रोधक वस्त्र प्रह्लाद के ऊपर आ गया और वह बच गया, जबकि होलिका भस्म हो गई कहते हैं कि जिस दिन होलिका ने आग में बैठने का काम किया, अगले दिन उसका विवाह भी होना था होली का त्योहार है और जब चारों दिशाएं इसी रंग में रंगी हुई है तो याद आता है कि इस पर्व की वजह भी तो किसी की करुण पुकार ही है एक बच्चे की पुकार जो महज 11 या 12 साल का रहा होगा प्रह्लाद नाम था उसका दैत्यकुल में जन्मा था ऐसा कुल, जिसकी खानदानी परंपरा ही थी विष्णु से विद्रोह, देवताओं से ईर्ष्या, मनुष्यता से बैर और सत्कर्मों से दूरी इसी प्रह्लाद का पिता था दैत्यराज हिरण्यकश्यप हिरण्यकश्यप ने ब्रह्मा जी से वरदान मांगा था कि न उसे कोई मानव मार सके, और न ही कोई पशु, न रात और न ही दिन में उसकी मृत्यु हो, उसे कोई भी न घर के भीतर और न बाहर मार सके इतना ही नहीं, उसने ये भी मांगा कि न धरती पर और न ही आकाश में, न किसी अस्त्र से और किसी शस्त्र से उसकी मृत्यु हो हिरण्यकश्यप के घर जब प्रह्लाद का जन्म हुआ तो वह बचपन से ही विष्णुभक्त निकला यह कथा, भागवत पुराण के सप्तम स्कन्ध में वर्णित है हिरण्यकश्यप और उसके पुत्र प्रह्लाद की ये कहानी न केवल एक धार्मिक गाथा है, बल्कि इसमें निहित निःस्वार्थ भक्ति और बुराई पर अच्छाई की विजय का संदेश, आज के विचलित समाज को ईश्वर की मौजूदगी और उसके न्याय के प्रति अधिक विश्वास दिलाता है जैसे-जैसे प्रह्लाद बड़ा होता गया, उसके जन्म के संस्कार और अधिक प्रबल होते चले गए वह पूरी तरह विष्णुभक्त बन गया दैत्यराज हिरण्यकश्यप ने अपने पुत्र और श्रीहरि के परमभक्त प्रह्लाद पर भीषण अत्याचार किए वह चाहता था कि प्रह्लाद अपने पिता यानी खुद हिरण्यकश्यप की पूजा करे लेकिन प्रह्लाद विष्णुभक्त थे उनके मुंह से आठों पहर श्रीहरि का नाम निकलता था जिससे हिरण्यकश्यप नाराज हो गया उसने अपने बेटे प्रह्लाद को हाथी के पैरों के नीचे कुचलवाने की कोशिश की, उसे जहर दिया, सर्पों से भरे तहखाने में बंद कर दिया, ऊंचाई से फिंकवा दिया, जंजीरों में बांधकर पानी में डुबा दिया लेकिन प्रह्लाद हर बार बच गए ऐसे भस्म हुई थी होलिका फिर हिरण्यकश्यप ने होलिका के साथ मिलकर प्रह्लाद को मारने की योजना बनाई होलिका हिरण्यकश्यप की बहन थी और उसका विवाह असुर विप्रचीति से हुआ था एक बार, हिरण्यकश्यप की बहन होलिका ने प्रह्लाद को मारने के लिए अपने भाई का साथ दिया भागवत कथा और विष्णु पुराण के अनुसार, होलिका को ब्रह्माजी से वरदान में ऐसा वस?त्र मिला था जो कभी आग से जल नहीं सकता था बस होलिका उसी वस?त्र को ओढ़कर प्रह्लाद को जलाने के लिए आग में जाकर बैठ गई, जैसे ही प्रह्लाद ने भगवान विष्णु के नाम का जाप किया, होलिका का अगिन्रोधक वस्त्र प्रह्लाद के ऊपर आ गया और वह बच गया, जबकि होलिका भस्म हो गई मान्यता है, कि तब से ही बुराई पर अच्छाई की जीत के उत्साह स्वरूप सदियों से हर वर्ष होलिका दहन मनाया जाता है होलिका दहन की कथा पाप पर धर्म की विजय का प्रतीक है नई बहु क्यों नहीं देखती होलिका दहन कई लोक कथाओं में होलिका की इसी कहानी का एक और स्वरूप मिलता है. कहते हैं कि जिस दिन होलिका ने आग में बैठने का काम किया, अगले दिन उसका विवाह भी होना था उसके होने वाली पति का नाम इलोजी बताया जाता है लोक कथा के मुताबिक, इलोजी की मां जब बेटे की बारात लेकर होलिका के घर पहुंची तो उन्होंने उसकी चिता जलते दिखी अपने बेटे का बसने वाला संसार उजड़ता देख वह बेसुध हो गईं और उन्होंने प्राण त्याग दिए बस तभी से ये प्रथा चला आ रही है कि नई बहू को ससुराल में पहली होली नहीं देखनी चाहिए इसीलिए वह होली से कुछ दिन पहले मायके आ जाती हैं

सुबह में 9 बजकर 24 मिनट से लेकर रात 10 बजकर 27 मिनट तक रहेगी इसलिए, उस दिन रात्रि में 10 बजकर 27 मिनट के बाद ही होलिका दहन किया जा सकता है इस साल रंगों का पर्व होली पूरे हर्षोल्लास के साथ 25 मार्च, सोमवार को मनाया जाएगा लेकिन, होली के ठीक एक दिन पहले फाल्गुन मास की पूर्णिमा पर पूरे दिन भर भद्रा होने की वजह से होलिका दहन 24 मार्च को रात में ही किया जा सकेगा आइए जानते हैं ज्योतिषियों के मुताबिक क्या है होलिका दहन का सही समय और अलग-अलग 12 राशियों के जातक अपने राशियों के मुताबिक रंगों का चयन करके किस तरह से अपना जीवन सुखमय बना सकते हैं? होलिका दहन का शुभ मुहूर्त ज्योतिषी पंडित सुधांशु तिवारी जी ने बताया कि इस वर्ष 24 मार्च को होलिका दहन किया जाएगा लेकिन, फाल्गुन की पूर्णिमा में भद्रा के बाद ही होलिका दहन का विधान होता है 24 मार्च को भद्रा सुबह में 9 बजकर 24 मिनट से लेकर रात 10 बजकर 27 मिनट तक रहेगी इसलिए, उस दिन रात्रि में 10 बजकर 27 मिनट के बाद ही होलिका दहन किया जा सकता है होलिका दहन पूजन विधि होलिका दहन करने वाले व्यक्ति को सर्वहित में सबका प्रतिनिधि बनकर संकल्प के पहले तक रंग खेला जाना चाहिए फिर, सायंकाल नए वस्त्र पहनकर होलिका के धुनि का वंदन करें फिर घर में देवी देवता और पितरों के चित्र पर अबीर या रंग अर्पित करके, अपने बड़ों को जाकर अबीर गुलाल लगाकर उनका आशीर्वाद प्राप्त करें ज्योतिषी पंडित सुधांशु तिवारी के अनुसार 12 राशियां करें इस तरह का रंगों का चयन 12 राशियों के मुताबिक, होली पर रंगों का चयन करके होली खेलने के बारे में ज्योतिषाचार्य वेद पंडित सुधांशु तिवारी ने बताया कि- **1. मेष राशि वाले जातक लाल रंग से होली खेलें 2. वृष राशि वाले श्वेत या हल्के पीले रंग से होली खेल सकते हैं 3. मिथुन राशि वाले हरे रंग से होली खेलें तो लाभदायक होगा 4. कर्क राशि वाले केसरिया रंग से खेलें 5. सिंह वाले लाल रंग से होली खेलें 6. कन्या और तुला वाले हरे रंग से होली खेलें 7. वृश्चिक राशि वाले लाल रंग से होली खेलें 8. धनु राशि वाले पीले रंग से होली खेलें 9. मकर, कुंभ और मीन राशि वाले गाढ़े नीले या हल्के काले रंग से होली खेलें, लाभदायक होगा** उन्होंने बताया कि इन्हीं रंगों के मुताबिक, अलग-अलग राशि वाले वस्त्रों को भी पहनकर अपने जीवन में ग्रहों के प्रभाव को कम करते हुए सुख शांति ला सकते हैं उन्होंने बताया कि रंग खेलने से 100 साल बाद होली और चंद्र ग्रहण एक साथ इस वर्ष होली पर चंद्र ग्रहण का भी साया रहेगा। चंद्र ग्रहण 25 मार्च को सुबह 10:23 बजे शुरू होगा और दोपहर 3:02 बजे तक रहेगा। यह चंद्र ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा। इसलिए इसका सूतक काल भी मान्य नहीं होगा। 24 मार्च को भद्रा कब से कब तक **भद्रा पूंछ- शाम 06 बजकर 33 मिनट से रात्रि 07 बजकर 53 मिनट तक भद्रा मुख- रात्रि 07 बजकर 53 मिनट से रात्रि 10 बजकर 06 मिनट तक होलिका दहन पर भद्रा का साया** इस वर्ष होलिका दहन 24 मार्च, सोमवार को किया जाएगा,लेकिन होलिका दहन के दिन भद्रा साया रहेगा। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भद्राकाल को शुभ नहीं माना जाता है और इस दौरान किसी भी तरह का पूजा-पाठ व शुभ काम करना वर्जित होता है। पंचांग के मुताबिक 24 मार्च को सुबह से भद्राकाल लग जाएगी। इस दिन भद्रा का प्रारंभ सुबह 09 बजकर 54 मिनट से हो रही है, जो रात 11 बजकर 13 मिनट तक रहेगी। इस तरह से भद्राकाल की समाप्ति के बाद ही होलिका दहन किया जा सकता है। **होली का पौराणिक महत्व** फाल्गुन मास की पूर्णिमा को बुराई पर अच्छाई की जीत को याद करते

आत्मनिर्भरता की ओर संस्कृति से समृद्धि की रहा पर बढ़ता यूपी

उत्तर प्रदेश देश की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में राष्ट्रीय जीडीपी में 9.2 फीसदी का योगदान कर रहा है। बीते सात वर्षों में राज्य की सकल घरेलू आय और प्रति व्यक्ति आय में भी दोगुने से अधिक

वृद्धि हुई है, जो दर्शाता है कि प्रदेश आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से बढ़ रहा है। उत्तर प्रदेश की 25 करोड़ जनता की सेवा, सुरक्षा और समृद्धि का हमारा व्रत सात वर्ष पूर्ण कर रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के विजन को मिशन के रूप में आत्मसात करते हुए 2017 में डबल इंजन की सरकार ने सुरक्षा, सुशासन और विकास की जिस यात्रा को प्रारंभ किया था, वह आज 'नए भारत के नए उत्तर प्रदेश' के रूप में पूरे देश के समक्ष प्रस्तुत है। हमारी नीतियों के प्रति जिस प्रकार जनता ने अपना सहयोग और समर्थन दिया है, उससे यह विश्वास और दृढ़ हो चला है कि स्पष्ट नीति, साफ नीयत, प्रतिबद्धतापूर्ण नियोजन के सद्प्रयास अवश्य फलित होते हैं। उत्तर प्रदेश के बदलाव की चर्चा आज राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हो रही है, तो इसके पीछे 'ट्रिपल सी' यानी, कल्चर, कनेक्टिविटी और कॉमर्स का मंत्र है। आज अयोध्या, काशी, मथुरा जैसे सनातन आस्था के मानबिंदुओं का यशगान पूरी दुनिया में हो रहा है। 500 वर्षों की प्रतीक्षा के बाद श्रीअयोध्याधाम में भव्य-दिव्य-नव्य मंदिर में श्रीरामलला भगवान की प्राण-प्रतिष्ठा, श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर पुनरोद्धार, विंध्यधाम कॉरिडोर, ब्रज भूमि, नैमिषारण्य धाम, और सोरों-सूकर क्षेत्र आदि के समग्र विकास के प्रयासों ने धार्मिक पर्यटन के क्षेत्र में नवीन संभावनाओं का मार्ग प्रशस्त किया है। हाल के वर्षों में देश के विभिनन्-प्रांतों से करोड़ों श्रद्धालुओं का प्रदेश में आगमन हुआ है, जिन्होंने स्थानीय अर्थव्यवस्था में बड़े पैमाने पर योगदान दिया है। परिणामतः, रोजगार के अवसर बढ़े हैं, खुशहाली के नवीन द्वार खुले हैं। आज उत्तर प्रदेश भारत का सबसे बड़ा टूरिज्म हब बनने की ओर अग्रसर है। यह बदलाव, नए बनते अवसर आस्था, अर्थव्यवस्था और संस्कृति की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज उत्तर प्रदेश में जल, थल और नभ की बेहतरीन कनेक्टिविटी है। देश का सबसे बड़ा रेल और रोड नेटवर्क यहीं है। यही एकमात्र प्रदेश है, जहां पांच अंतरराष्ट्रीय और 16 घरेलू हवाई अड्डे हैं। ईस्टर्न और वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर का जंक्शन यहां है। छह एक्सप्रेसवे संचालित हैं, सात निर्माणाधीन है। हमारी योजना है कि अगले वर्ष जब पूरी दुनिया से संत व श्रद्धालु प्रयागराज महाकुंभ में सनन के लिए आएं, तो उन्हें गंगा एक्सप्रेसवे का सुखद अनुभव प्राप्त हो। प्रधानमंत्री के विशेष सन्ह का परिणाम है कि देश का पहला इनलैंड वाटर-वे और पहली रैपिड रेल के संचालन का गौरव प्रदेश को प्राप्त हुआ। नए भारत का यह नया उत्तर प्रदेश' आज 'स्व' से साक्षात्कार कर रहा है। अपनी प्रतिभा, परंपरा और संभावनाओं को पहचान कर यह सुशासन और विकास से जुड़ चुका है। यहां आस्था, परंपरा और विरासत का सम्मान है, तो अर्थव्यवस्था पर भी पूरा ध्यान है। आज उत्तर प्रदेश देश की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में राष्ट्रीय जीडीपी में 9.2 फीसदी का योगदान कर रहा है। बीते सात वर्षों में राज्य की सकल घरेलू आय में दोगुने से अधिक वृद्धि हुई है। रेवेन्यू सरप्लस स्टेट के रूप में उत्तर प्रदेश की सशक्त पहचान बनी है, जो दर्शाता है कि प्रदेश आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से बढ़ा है। प्रति व्यक्ति आय में दोगुने से अधिक वृद्धि हुई है। उत्तर प्रदेश 10 खरब डॉलर की अर्थव्यवस्था के लक्ष्य की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। पिछले वर्ष ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में दुनिया भर से 40 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव मिलना न केवल उत्तर प्रदेश, बल्कि देश के किसी भी राज्य के इतिहास में अभूतपूर्व घटना थी। यह प्रदेश को निवेश के श्रेष्ठ गंतव्य और भविष्य के भरोसे के रूप में व्यक्त करता है। एक वर्ष की अवधि के भीतर हमने 10.24 लाख करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाओं का क्रियान्वयन भी शुरू कर दिया। इतनी बड़ी राशि का निवेश युवाओं के सपनों को साकार करने में भी सहायक होगा। हर हाथ को काम मिलेगा, हर घर खुशहाली आएगी। इन वर्षों में साढ़े छह लाख युवाओं को पारदर्शी ढंग से सरकारी नौकरियां मिली हैं। हमने चार लाख करोड़ रुपये से लेकर 40 लाख करोड़ रुपये तक के निवेश प्रस्तावों की जो यात्रा तय की है, इसने प्रदेश में नवोन्मेष और स्टार्टअप संस्कृति के विकास को प्रोत्साहित किया है। इसका परिणाम है कि आज प्रदेश का युवा 'जॉब सीकर' से आगे बढ़कर 'जॉब क्रिएटर' बन रहा है। डबल इंजन सरकार के सात वर्ष 'संकल्प से सिद्धि' के रहे हैं। इन वर्षों में अंत्योदय से सर्वोदय तक, स्वास्थ्य से शिक्षा, इंफ्रास्ट्रक्चर से इंडस्ट्री, कृषि से कॉमर्स और ईज ऑफ डूइंग बिजनेस से ईज ऑफ लिविंग तक के संकल्प को समवेत करते हुए 'विकसित उत्तर प्रदेश' का मार्ग प्रशस्त हुआ है। 23 लाख हेक्टेयर से अधिक अतिरिक्त सिंचित भूमि का सृजन कर खेती की लागत में कमी और उत्पादकता में वृद्धि सुनिश्चित की गई है। अब प्रदेश के किसानों को सिंचाई के लिए बिजली बिल भी नहीं देना पड़ता।

भगत सिंह के हक में लाहौर से उठी आवाज, इम्तियाज रशीद कुरैशी बने चेहरा

शहीद भगत सिंह मेमोरियल फाउंडेशन के अध्यक्ष इम्तियाज रशीद कुरैशी शादमान चौक का नाम भगत सिंह चौक रखने की आवाज उठा रहे है।वर्ष 1931 में लाहौर जेल में जिस जगह

क्रांतिकारी भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी पर लटकाया गया था, वहां अब शादमान चौक है। बंटवारे के बाद पाकिस्तान की धरती पर इन इंकलाबियों का नामो-निशान मिटा दिया गया, जबकि यह शहर आजादी के योद्धाओं का बड़ा केंद्र था। 1928 में साइमन कमीशन के विरोध में हुए प्रदर्शन के दौरान लाठी चार्ज में घायल लाला लाजपत राय की मृत्यु के बाद 'हिंदुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ' के क्रांतिकारी भगत सिंह और राजगुरु ने लाहौर में पुलिस अफसर सांडर्स को मार कर इसका बदला लिया और उन्होंने लाहौर की सड़कों पर 'नौकरशाही सावधान!' के पोस्टर भी चिपकाए। उसके बाद 'लाहौर षड्यंत्र केस' का प्रसिद्ध मुकदमा यहीं चला। उन्हीं दिनों क्रांतिकारी दल के सेनापति चंद्रशेखर आजाद के नेतृत्व में भगत सिंह को जेल से छुड़ाने की योजना बनी, लेकिन एक साथी के शहीद हो जाने की वजह से आजाद को वह योजना स्थगित करनी पड़ी। लाहौर में चले मुकदमे में भगत सिंह और उनके साथी को फांसी की सजा दे दी गई। लाहौर का शादमान चौक भले ही अब भीड़-भरा चौराहा हो, लेकिन यहां इंकलाब की अनुगूंज अब भी मद्धिम नहीं पड़ी है, जबकि भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव की शहादत को 95 वर्ष बीत चुके है। यह हमारे इतिहास और संस्कृति की ताकत है कि 1947 में हुए देश के अप्राकृतिक विभाजन के बाद भी लाहौर ने भगत सिंह और उनके साथियों के अप्रतिम बलिदान को भुलाया नहीं है, बल्कि वहां के शहीद भगत सिंह मेमोरियल फाउंडेशन के अध्यक्ष इम्तियाज रशीद कुरैशी, एडवोकेट लाहौर हाईकोर्ट और उनके सहयोगी निरंतर इस मुहिम को जिंदा रखे हुए है। कुरैशी ने ही सबसे पहले लाहौर उच्च न्यायालय में उस फैसले का विरोध किया था, जिसके तहत भगत सिंह को फांसी की सजा सुनाई गई थी। उनका कहना था कि सांडर्स को मारे जाने की जो प्रथम सूचना रिपोर्ट 17 दिसंबर, 1928 को थाना अनारकली में दर्ज की गई थी, उसमें भगत सिंह नामजद नहीं थे। यह अकाट्य है कि आजाद के नेतृत्व में राजगुरु और भगत सिंह ने सांडर्स को मारा था और उसमें आजाद सहित दल के अन्य सदस्य भी शामिल थे। भगत सिंह और राजगुरु जब सांडर्स को मारकर भागे, तो उनके पीछे पड़ने वाले पुलिस कॉन्स्टेबल चानन सिंह को खबरदार करने और फिर बात न मानने पर उसे गोली का निशाना बनाने वाले आजाद ही थे। इस क्रांतिकारी घटना के साक्षियों की संस्मृतियां भी यही साबित करती है। ऐसे में, मेरा यह मानना रहा है कि एक बड़ी बेंच के सम्मुख भगत सिंह को निदोष साबित करने की न्यायिक मुहिम का अब कोई अर्थ नहीं है, बल्कि जरूरी यह है कि भगत सिंह के इंकलाबी सपने को जमीन पर उतारने के लिए उनके समाजवादी और धर्मनिरपेक्ष विचारों को गति देने का बड़ा अभियान चलाया जाए, जिसमें लाहौर के लोग भी आगे आएं। कुरैशी अनेक वर्षों से लाहौर के शादमान चौक पर अपने कुछ मित्रों के साथ इकट्ठे होकर भगत सिंह को शहादत दिवस और उनके जन्मदिन के मौके पर याद करने से चूकते नहीं हैं, हालांकि ऐसा करने के लिए उन्हें निरंतर पाकिस्तानी कट्टपंथियों और प्रशासन से बड़ी लड़ाई लड़नी पड़ी है। खुशी की बात है कि कुरैशी ने पांच नवंबर, 2018 को लाहौर उच्च न्यायालय से राज्य सरकार और जिला प्रशासन के लिए यह आदेश भी हासिल कर लिया कि शादमान चौक का नामकरण शहीद भगत सिंह के नाम पर कर दिया जाए, जबकि पाकिस्तान के कट्टरपंथी इसका लगातार विरोध कर रहे थे। पाकिस्तान में हम इसे इंकलाब के पैरोकारों की बड़ी जीत के तौर पर देख रहे है, जिसका श्रेय कुरैशी को जाता है। नौकरशाही ने जब उच्च न्यायालय के आदेश का पालन नहीं किया, तो कुरैशी न्यायालय के आदेश की अवमानना का मुद्दा लेकर फिर अदालत जा पहुंचे। एक मार्च, 2024 को लाहौर उच्च न्यायालय के न्यायाधीश शम्स महमूद मिर्जा ने 'भगत सिंह चौक' न बनाए जाने के मामले पर सुनवाई के बाद पश्चिमी पंजाब की सरकार के मुख्य सचिव जाहिद अख्तर जमान, डिप्टी कमिशनर व प्रशासक लाहौर राफिया हैदर को अदालत की मानहानि याचिका के मद्देनजर 26 अप्रैल को पेश होने का नोटिस जारी किया है। यह कुरैशी की बड़ी जीत है। उम्मीद है कि उनकी यह मुहिम उस जगह को भगत सिंह चौक का नाम दे सकेगी, जहां ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने लाहौर जेल में बने उस समय के फांसीघर में उनसे जीने का अधिकार छीन लिया था।

संक्षिप्त समाचार

नगर पंचायत में चल रहे हैं बिना नंबर प्लेट के वाहन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
डाला/सोनभद्र। डालाबजार - नगर पंचायत में लगभग आधा दर्जन से ज्यादा कचरा ढोने वाली डीजल चलित गाड़ियां हैं। साथ ही एक वाहन बिजली के तार आदि की गड़बड़ी ठीक करने वाला तो एक प्रचार वाहन तथा अन्य ट्रेक्टर सहित दर्जनों गाड़िया है।

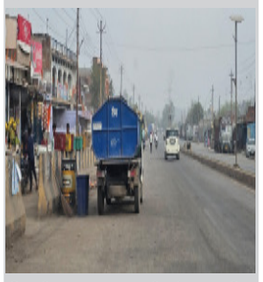

किसी पर नंबर नहीं है। जबकि नियम है कि रजिस्ट्रेशन के बाद इनका नंबर जरूर लिया जाय। यह काम पिछले नवसृजित नगरपंचायत बनने के बाद से हो रहा है लेकिन जिम्मेदार महकमा ध्यान नहीं देता। गाड़ियों पर उत्तर प्रदेश सरकार लिखने के बाद जैसे साले नियम समाप्त हो गए हों। डालाबाजार नगरपंचायत में नियमों को ताक पर रखकर बिना नम्बर प्लेट के वाहनों को संचालित करवा रहा है। जहां एक तरफ आम आदमी अगर यातायात नियमो का उल्लंघन करता है तो उसे हजारों रुपये का चालान भरना पड़ता है। पुलिस से लेकर एआरटीओ कार्रवाई करने में पीछे नहीं हटते। वहीं नगर पंचायत डाला बाजार की गाड़िया दिन रात बिना किसी नंबर प्लेट के सड़कों पर दौड़ती रहती हैं, लेकिन कोई भी जिम्मेदार इनपर कार्रवाई की जहमत नहीं उठाता। कचरा ढोने वाली गाड़ियों के साथ ही नपं के प्रचार वाहन भी बिना नंबर के चल रहे हैं। यदि किसी भी समय कोई अप्रिय घटना हो जाय तो पता नही चलेगा कि किसके द्वारा हुआ और सभी जिम्मेदार पल्ला झाड़ते नजर आएंगे। नगरवासियों ने जिलाधिकारी महोदय का ध्यान आकृष्ट कराया है कि इस प्रकार की मनमानी पर रोक लगाई जाए।

चौरासी लाख योनियां भोगने के बाद मनुष्य जन्म बड़े भाग्य से मिलता है-आचार्य विष्णुकांत पराशर

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा। नोएडा श्रीराम मित्र मंडल नोएडा के तत्वावधान में सेक्टर-20 के श्री हनुमान मंदिर में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ में कथावाचक आचार्य विष्णुकांत जी पाराशर वृंदावन धाम ने तीसरे दिन की कथा में कपिल देवहूति संवाद के बारे में बताया,जिसमें उन्होंने कहा कि ठचौरासी लाख योनियां भोगने के बाद मनुष्य जन्म बड़े भाग्य से मिलता है।गृहस्थ के साथ-साथ भगवान की याद जीवन में बनी रहे ।भगवान को हम नहीं भूलें। उन्होंने कहा कि अष्टांग योग, यम, नियम, आसन, प्राणायाम प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, समाधि इससे मन पवित्र होता है। भगवान के चरणों का दर्शन करने से हमारे पाप कटते है।ठ जडभरत-रहूगण् संवाद की चर्चा करते हुये उन्होंने बताया कि मनुष्य की आत्मा-परमात्मा में भेद नहीं है। भगवान के दर्शन से ज्यादा नाम जरूरी है।संकेत में, हँसी म?जाक में भगवान का नाम कल्याण करता है। नरक में न जाना पड़े इसीलिए भगवन् नाम का जप करते रहना चाहिये।उन्होंने प्रहलादचरित्र सुनाया और कहा कि नरसिंह भगवान भक्ति से प्रसनन्होकर खंभा तोड़कर प्रकट हुए।कथा 23 मार्च तक चलेगी।प्रतिदिन सायं 04 बजे से 07.30 बजे तक कथा व्यासजी द्वारा श्रीमद्भागवत जी की कथा का गुणगान किया जायेगा।22 मार्च को होली मंगल मिलन का आयोजन किया जाएगा।23 मार्च को अंतिम दिन कथा पूर्वाह्न 10.00 बजे शुरू होगी तथा हवन एवं व्यास पूजन के साथ ही कथा का समापन हो जायेगा।श्रीराम मित्र मंडल नोएडा द्वारा आयोजित कथा ज्ञान यज्ञ का आयोजन श्रीहनुमान मंदिर समिति सेक्टर-20 के सहयोग से किया गया है।श्रीराम मित्र मंडल नोएडा के अध्यक्ष धर्मपाल गोयल एवं महासचिव मुनन कुमार शर्मा ने कथा व्यासजी एवं अतिथियों का पटका ओढ़ाकर सम्मान किया। कथा श्रवण के लिये कथा स्थल पर आयोजन समिति के चेयरमैन उमाशंकर गर्ग,कथा संयोजक अनिल गोयल,कोषाध्यक्ष राजेन्द्र गर्ग, वरिष्ठ वर्मा,डॉ.एसपीजैन,जेएमगुप्ता,राधाकृष्ण गर्ग,पवन गोयल,राजकुमार गर्ग, मुकेश गोयल,मुकेश गुप्ता,सुशीला शर्मा।,रामपाल भाटी,गंगाराम यादव,विनय गुप्ता सहित सैकड़ों भक्त उपस्थित थे।

शास्त्रीनगर में जीडीए की 50 दुकानें होंगी ध्वस्त, बनेगा कॉम्प्लेक्स- मिलेंगी ये सुविधाएं

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
गोरखपुर । गोरखपुर के शास्त्रीनगर में जीडीए की निर्मित सभी 50 दुकानें ध्वस्त होंगी। इन जर्जर दुकानों से प्राधिकरण को कोई आय नहीं हो रही बल्कि हादसे की आशंका भी बना रहती है। हालांकि इन दुकानों में दो आवंटित हैं। ध्वस्तीकरण के पूर्व उनके आवंटियों का समायोजन होगा। प्राधिकरण की योजना इस जमीन पर कामशिय्यल एवं आवासीय कॉम्प्लेक्स बनाने की है। ताकि उनका निर्माण कर उन्हें नए सिरे से किराए पर उठाया जा सके। जीडीए ने शास्त्रीनगर में वर्ष 1988 में 1500 वर्ग मीटर जमीन में 50 दुकानों का निर्माण किया। किन्ही कारणों से सिर्फ छह दुकानें ही आवंटित हो सकीं। वर्तमान में सिर्फ दो दुकानों ही खुल रहीं हैं। शेष देखरेख के अभाव में जर्जर भी हो गईं। जीडीए ने शास्त्रीनगर में वर्ष 1988 में 1500 वर्ग मीटर जमीन में 50 दुकानों का निर्माण किया। किन्ही कारणों से सिर्फ छह दुकानें ही आवंटित हो सकीं। वर्तमान में सिर्फ दो दुकानों ही खुल रहीं हैं। शेष देखरेख के अभाव में जर्जर भी हो गई प्राधिकरण उपाध्यक्ष आनंद वर्द्धन ने दो दिन पहले निरीक्षण के दौरान इन दुकानों की जर्जर हालत देखते हुए सभी को ध्वस्त करने के निर्देश दिए हैं। साथ ही इस 1500 वर्ग मीटर जमीन पर कामशिय्यल एवं आवासीय कॉम्प्लेक्स के निर्माण के निर्देश दिए हैं। जिनमें नीचे के फ्लोर पर दुकानें और ऊपर आवास बनाए जाएंगे। जिससे प्राधिकरण के आय में वृद्धि होगी। डॉक्टर एन्क्लेव में दो एकड़ जमीन पर बनेगी ग्रुप हाउसिंग व कामशिय्यल परियोजना मेडिकल कॉलेज रोड पर डॉक्टर एन्क्लेव के निकट प्राधिकरण की दो एकड़ जमीन है। इस जमीन का अधिकांश हिस्सा खाली है, जबकि कुछ पर अतिक्रमण है। प्राधिकरण उपाध्यक्ष आनंद वर्द्धन के निर्देश पर इस अतिक्रमण को जल्द ही हटाया जाएगा। प्राधिकरण इस जमीन पर ग्रुप हाउसिंग और कामशिय्यल परियोजना की संभावनाएं तलाश रहा है। रोड से लगी इस जमीन से प्राधिकरण को अच्छी आमदनी की उम्मीद है।

लोकसभा चुनाव के लिए सपा व कांग्रेस नोएडा महानगर अध्यक्ष ने बैठक कर बनाई रणनीति

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा। नोएडा आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर सपा नोएडा महानगर अध्यक्ष डॉक्टर आश्रय गुप्ता व कांग्रेस नोएडा महानगर अध्यक्ष रामकुमार तंवर ने बैठक कर बनाई रणनीति , गौतमबुध नगर से सपा व कांग्रेस के संयुक्त प्रत्याशी डॉक्टर महेंद्र नागर घोषित किए गए हैं। महानगर अध्यक्ष डॉक्टर आश्रय गुप्ता ने कहा कि वर्तमान सरकार से जनता परेशान हो चुकी है ।10 सालों में वर्तमान संसद में सिर्फ लोगों को ठगने का काम किया है। इस बार यहां की जनता इनके झूठी बातों में आने वाली नहीं है। जनता सब जान चुकी है ।इस बार गौतमबुद्ध नगर से इंडिया गठबंधन भारी मतों से जीतने जा रही है।

द्वितीय दिवस की कथा में परीक्षित जन्म,सुकदेवजी द्वारा भागवत चर्चा का वर्णन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा। नोएडा सेक्टर-20 स्थित श्रीहनुमान मंदिर में श्रीराम मित्र मंडल नोएडा द्वारा आयोजित श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ के द्वितीय दिवस की कथा में कथाव्यास आचार्य विष्णुकांत पराशर जी ने परीक्षित जन्म का वर्णन विस्तारपूर्वक किया।उन्होंने बताया कि ऋषि श्रृंगी ने अपने पिता के अपमान से क्रोधित होकर राजा परीक्षित को सात दिनों में मरने का श्राप दे दिया।मृत्यु को सुलभ बनाने के लिये सुकदेवजी ने गंगा के तट पर राजा परीक्षित को भागवत जी की कथा सुनायी।उन्होंने महाभारत की कथा और भीष्म द्वारा भगवान कृष्ण की स्तुति का भी वर्णन किया। कथा का समापन 23 मार्च को होगा।। प्रतिदिन सायं 04 बजे से 07.30 बजे तक कथा व्यासजी द्वारा श्रीमद्भागवत जी की कथा का गुणगान किया जायेगा।22 मार्च को होली मंगल मिलन का आयोजन किया जाएगा।23 मार्च को अंतिम दिन कथा पूर्वाह्न 10.00 बजे शुरू होगी तथा हवन एवं व्यास पूजन के साथ ही कथा का समापन हो जायेगा। कथा श्रवण के लिये कथा स्थल पर आयोजन समिति के चेयरमैन उमाशंकर गर्ग,अध्यक्ष धर्मपाल गोयल ,महासचिव मुनन कुमार शर्मा,कथा संयोजक अनिल गोयल,कोषाध्यक्ष राजेन्द्र गर्ग, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सतनरायण गोयल, बजरंगलाल गुप्ता,पवन गोयल,राजकुमार गर्ग, मुकेश गोयल,मुकेश गुप्ता,जेएमगुप्ता, सुशीला शर्मा,रामपाल भाटी, गंगाराम यादव, एस एम गुप्ता, अनंत वर्मा, विनय गुप्ता सहित सैकड़ों भक्त उपस्थित थे।

उत्तराखंड प्रवासी निराला मंच द्वारा होली मिलन समारोह का हुआ आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा। नोएडा ग्रेटर नोएडा वेस्ट निराला एसपायर सोसाइटी में प्रवासीय परिवारों ने भागीदारी की। सोसाइटी में रहने वाली महिलाओं बच्चों और पुरुषों द्वारा उत्तराखंड की होली के लोकगीतों का गायन हुआ। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रारंभ सुरीली धुनों के साथ हुआ। कार्यक्रम का सफल आयोजन करने के लिए इस टीम में शामिल मुख्य रूप से श्री दीपक पंत, श्री रंजनीश भंडारी, श्री पारस जोशी, श्री मनोज उप्रेती, श्री सोमिल बेलवाल, श्री विवेक डबराल, श्री हरिश दुर्गापाल, श्री राकेश मनराल,श्री विकास भट्ट, श्री पंकज उप्रेती, श्री अरुल उपाध्याय, श्री गोपाल बिष्ट, श्री पंकज सिरोला, श्री संजय, श्री योगेन्द्र, सोसाइटी की मेंटेनेंस टीम एवं अन्य लोग का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ।

उत्तराखंड प्रवासी निराला मंच द्वारा ठदेवभूमि उत्तराखंड मेरो पहाइ़ठ के अंतर्गत होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में निराला एसपायर सोसाइटी में रहने वाले 100 से अधिक उत्तराखंड

विघटनकारी प्रौद्योगिकियों पर दूसरे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा। नोएडा ग्रेटर नॉएडा स्थित जीएल बजाज इंस्टीट्यूट ऑफ टेकनेलॉजी एंड मैनेजमेंट (जीएलबीआईटीएम) के सीएसई विभाग द्वारा ठविघटनकारी प्रौद्योगिकियोंठ पर आयोजित दूसरे अंतर्राष्ट्रीय आईईईई सम्मेलन का समापन कार्यक्रम आयोजित किया गया। समापन समारोह में डॉ एपीजे अब्दुल कलाम तकनीकी विश्वविद्यालय लखनऊ के माननीय कुलपति प्रोफेसर जेपी पांडे मुख्य अतिथि और एनएसयूटी वेस्ट कैंपस नई दिल्ली की कैंपस निदेशक प्रोफेसर प्रेरणा गौड़ विशिष्ट अतिथि रही। एनआईटी दिल्ली के डीन रिसर्च एंड कंसल्टेंसी प्रोफेसर अनुराग सिंह, आईजीडीटीयूडब्लूयू नई दिल्ली के डीन शैक्षणिक मामले प्रोफेसर अरुण शर्मा, एमएमएमयूटी गोरखपुर के प्रोफेसर प्रभाकर तिवारी और एथेंस विश्वविद्यालय ग्रीस के प्रोफेसर एलेक्सियोस करीस ने मुख्य वक्ता के रूप में अपने बहुमूल्य विचार प्रतिभागियों के साथ साझा किये।

ऋषि चैरिटेबल ट्रस्ट ने बच्चों संग मनाई होली

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा। संस्थापक,भारती नेगी के सहयोग से ऋषि की पाठशाला में जरूरतमंद पढ़ने वाले नन्हे मुनने बच्चों ने रंग गुलाल लगाकर मनाया होली का पर्व ट्रस्ट की संस्थापक भारती नेगी ने सभी बच्चों को बताया रंगों का त्योहार होली भारतवर्ष की सबसे प्रमुख त्योहारों में शामिल किया जाता है। प्राचीन काल से ही देश में इस त्यौहार को मनाए जाने के प्रमाण उपलब्ध हुए हैं। जैसे कि देश में विभिनन भागों में विभिनन रूपों में मनाया जाता है। होली का त्यौहार मानव जीवन को खुशियों के रंग से सरोबार कर देता है। सभी बच्चों ने होली मनाते हुए डांस गानों के साथ मस्ती की बच्चों ने जूस समोसे सेन्क्स आदि के साथ होली का त्यौहार बड़ी धूमधाम के साथ मनाया और बच्चे काफी मस्ती करते हुए नजर आए। उपस्थित,भारती नेगी,जीएस नेगी प्रीति सिंह,आरती,आदि लोग उपस्थित रहे।

अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा ने होली मिलन का आयोजन किया

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा। नोएडा डीसेंट पब्लिक इंटर कॉलेज दादरी में अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा का होली मिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें मुख्य अतिथि के तौर पर कैबिनेट मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार सुनील शर्मा मौजूद रहे इनके साथ पूर्व मंत्री सतीश शर्मा महासभा के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष जेके गॉड राष्ट्रीय प्रचार मंत्री देवेंद्र भारद्वाज एनसीआर के अध्यक्ष नरेश पाल कौशिक महिला बैंक की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती दिग्विजय दीक्षित मौजूद रही कार्यक्रम के आयोजक मंडल में प्रदेश महामंत्री परमानंद शर्मा नगर अध्यक्ष मांगेराम शर्मा जिला अध्यक्ष शर्मा कार्यकारी जिला अध्यक्ष उमेश शर्मा जिला कोषाध्यक्ष अनिल शर्मा नगर कोषाध्यक्ष विजय शर्मा नगर महामंत्री रतन वीर शर्मा जिला महामंत्री रामकुमार शर्मा मंडल अध्यक्ष राजू पंडित मंडल मंत्री केके शर्मा विशेष रूप से मौजूद रहे इस कार्यक्रम में महिला प्रकोष्ठ की मंडल अध्यक्ष गायत्री तिवारी महामंत्री पूजा शर्मा जिला अध्यक्ष गौतम बुध नगर एडवोकेट निधि शर्मा हुआ उनके साथ कई महिलाएं कार्यक्रम में थी जिनको अजीवन मेंबर सदस्य दी गई कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष के रूप में पंडित पीतांबर शर्मा द्वारा की गई । सभी ने एक मत से ब्राह्मणों को एक झंडे के नीचे आने का आवाहन किया करीब 1:00 बजे अभी हाल में उत्तर प्रदेश की कैबिनेट में मंत्री बनाए गए सुनील शर्मा कार्यक्रम में आए प्रदेश अध्यक्ष और प्रदेश के पदाधिकारी जिले के पदाधिकारी महिला प्रकोष्ठ की पदाधिकारी ने मंत्री जी का स्वागत किया इस मौके पर वित्तविहीन संस्था के पदाधिकारी यतेंद्र शर्मा धर्मेंद्र शर्मा, टीकाराम शर्मा आदि को आजीवन सदस्यता दिलाई गई इस मौके पर सुनील शर्मा प्रदीप शर्मा पुरुषोत्तम शर्मा सुरेंद्र शर्मा डॉ सुभाष त्यागी नोएडा एम्पलाइज एसोसिएशन के पूर्व महासचिव अशोक शर्मा दादरी तहसील के सभा के अध्यक्ष विनोद शर्मा सरकारी अस्पताल के अधीक्षक संजीव सारस्वत डेंटल विभाग की अध्यक्ष डॉक्टर बिंदु चतुर्वेदी हिंडन पर गाजियाबाद के अध्यक्ष नितिन शर्मा , एसके शर्मा श्रीराम शर्मा आदि आदि सैकड़ो लोग कार्यक्रम में उपस्थित थे । प्रदेश अध्यक्ष ने कहा हम किसी जाति और धर्म के खिलाफ नहीं है हम किसी पार्टी के फेवर और विरोधी नहीं है हम सिर्फ ब्राह्मणों के वेलफेयर की बात करते है।

सर्व शक्ति साधना मंडल ने होली मिलन समारोह आयोजित किया

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा। सेक्टर 82 पाकेट 7 में सर्व शक्ति साधना मंडल के बैनर तले होली मिलन समारोह आयोजित किया गया जिसमें दीप जलाकर कार्य क्रम का श्री गणेश किया गया। सभी सम्मानित भक्त गणों ने हनुमान चालीसा का पाठ एवं शिव स्तुति का पाठ किया। आरती हुई। इसके बाद सभी लोगों ने एक दूसरे को अबीर गुलाल लगाकर गले मिले। उसके बाद फूलों की होली भी खूब खेली गई। कार्यक्रम की व्यवस्था रमेश कुमार वर्मा एवं श्रीमती मंजू वर्मा के परिवार की तरफ से किया गया था। बाद में सभी लोग मिलकर फाग गीत भी गाए। इस मौके पर राघवेन्द्र दूबे, गोरे लाल, रवि राघव, सुशील कुमार पाल, पप्पू सिंह, दीपक तिवारी, उत्तम चंद्रा, विकास कुमार, देवेन्द्र कुमार गुप्ता, विष्णु शर्मा,बी डी गुप्ता, रमेश चंद्र शर्मा, राजवीर, विजय कुमार,धीरज कन्याल, प्रकाश जोशी, संजय पांडेय, हंस मणि शुक्ल, संगम प्रसाद मिश्र, शिव चौधरी, राजेश कुमार गुप्ता, रमेश चंद्र दास, राजेश कुमार पाठक,पदम सिंह आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

नेकी का डिब्बा फाउंडेशन ने गरीबों को कपड़े वितरित किए

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा। नोएडा एक बार फि.र से जरूरतमंद के दहलीज पर नेकी का डब्बा फाउण्डेशन का अभियान आपकी उतरन किसी की जरूरत हैठ के सातवें चरण में कुल लगभग छः हजार कपड़े वितरित किए गए। इन कपड़ो को ग्रेनो वेस्ट सेक्टर 10 के निर्माणाधीन प्रोजेक्ट पर काम कर रहे जरूरतमंद तक पहुंचाकर इस सर्द में उनके जीवन में गर्माहट लाई गई। इस मुहिम में 101 दिन मे 51 हज़ार कपड़े ज़रूरतमंद तक पहुंचाने के लक्ष्य के साथ है अब तक टोटल 45000 कपड़े ज़रूरतमंद तक पहुंचाएं जा चुके है। इस मुहिम में अब तक दिल्ली एनसीआर के तमाम सोसाइटी और कॉरपोरेट जुड़ चुके हैं जहां से जरूरतमंद के लिए नए और पुराने कपड़े प्राप्त हो रहे हैं। आज इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से कमल किशोर, उर्वशी, पूजा, संगीता, रजत अग्रवाल, पंकज जी, गिरीश शुक्ला और अन्य मौजूद रहे।

पांच वर्षों में डेढ़ लाख किलोमीटर की यात्रा करते हुए पुलवामा में शहीद हुए जवानों के घरों की पवित्र माटी को इकट्ठा किया

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नोएडा। नोएडा 14 फरवरी 2019 में हुए सीआरपीएफ पुलवामा हमले के अगले दिन से पूरे देश में डेढ़ लाख किलोमीटर का सफर तय करके 200 से अधिक शहीद जवानों के घर के आंगन की पवित्र माटी इकट्ठी करने वाले उमेश गोपीनाथ जाधव के पांच वर्षों की यात्रा को चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित पुस्तक का विमोचन नोएडा प्रेस क्लब में नेक्सजेन एनजिय्या के सीईओ डॉ पीयूष द्विवेदी, श्रीमंगलम कॉलेज के उपाध्यक्ष हर्षराज द्विवेदी, मदरलैंड अस्पताल के सीईओ डॉ बबित कुमार, गौरव मल्होत्रा, युवा क्रांति सेना के अध्यक्ष अविनाश सिंह, अंकुर शर्मा, विनीत शर्मा और गंगा शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के अध्यक्ष जितेंद्र अंबावता ने किया। उमेश गोपीनाथ जाधव ने कहा कि वह चाहते हैं कि शहीदों के आंगन से एकत्र की गई मिट्टी से भारत का नक्शा बनाकर देश के किसी भी वार मेमोरियल में रखा जाए। जिन शहीदों के घर के आंगन से मिट्टी ली गई है उन्होंने इंडियन आर्मी, इंडियन नेवी, इंडियन एयर फोर्स , इंडियन कोस्ट गार्ड, सेंट्रल आर्म्ड पुलिस फोर्सेज और स्टेट पुलिस में अपनी सेवाएं देते हुए सवीच्च बलिदान देश और देशवासियों के लिए दिया है। अमर बलिदानियों की पवित्र मिट्टी से भारत का नक्शा बनाया जाए, जिसे पर्यटन स्थल के तर्ज पर सभी के लिए खोला जाए। जहां सभी देशवासी हर रोज अमर बलिदानियों को याद करे और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करे। डॉ पीयूष द्विवेदी ने कहा की नोएडा की धरती पर अमर बलिदानियों के आंगन की मिट्टी के कलश पहुंचना हम सभी के लिए गर्व की बात है। वॉर मेमोरियल सिर्फ उमेश का ही नहीं बल्कि हम 140 करोड़ भारतीयों का सपना है। श्रीमंगलाम कॉलेज के उपाध्यक्ष हर्षराज द्विवेदी ने कहा कि इस मुहिम को लक्ष्य तक पहुंचाना नोएडा की प्राथमिकता होगी, जिसमे मीडिया से लेकर हर एक व्यक्ति अपना अहम योगदान देगा।कार्यक्रम का आयोजन युवा क्रांति सेना और विद्या फाउंडेशन ने किया।

सरकारी टैंकर में घोली जाएंगी रंगों की बोरियां, नगर निगम सरीखे नलों से बरसेगा रंग

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
प्रयागराज। लोकनाथ की कपड़ाफाड़ होली में हर मुहल्ले के रंग दिखेंगे। पांच सौ मीटर के दायरे में 20 से 25 हजार लोगों को रंगों से दिन भर बोरने का इंतजाम किया गया है। लोकनाथ की होली तबतक नहीं शुरू होगी, तबतक मिलन संघ के अध्यक्ष निखिल पांडेय बोरी-बोरी भर कर रंगों के साथ नहीं निकलेंगे। संस्कृतियों को संजोने वाले संगम के शहर में इस बार होली हटकर होगी। लोकनाथ की कपड़ाफाड़ होली के लिए रंगों की बोरियां और नगर निगम सरीखे नलों के फुहारे आ गए हैं। ठठेरी बाजार में पांच-पांच फीट की पीतल की पिचकारियां और रंगों से सराबोर होने के लिए टैंकर के आर्डर दे दिए गए है। पूरे शहर के तन-मन और मिजाज को रंगने की तैयारी है। लोकनाथ की कपड़ाफाड़ होली में हर मुहल्ले के रंग दिखेंगे। पांच सौ मीटर के दायरे में 20 से 25 हजार लोगों को रंगों से दिन भर बोरने का इंतजाम किया गया है। लोकनाथ की होली तबतक नहीं शुरू होगी।

शिव शंकर पाण्डेय लालगंज जेपी पटेल पटेहरा अशोक गुप्ता कोन ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष बनाए गए

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

मिर्जापुर। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष अजय राय पूर्व मंत्री के अनुमोदनोपरान्त मिर्जापुर जिले के सभी बारहों ब्लाक कांग्रेस कमेटी अध्यक्षो की घोषणा उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के संगठन महासचिव अनिल यादव द्वारा किया गया है। जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष डॉ शिव कुमार सिंह पटेल ने पत्रकारों को एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया है कि शिव शंकर पाण्डेय (लालगंज) अश्विनी द्विवेदी (हलिया) वायुसेना के पूर्व फ्लाईंग आफिसर रवि शंकर तिवारी (छानबे) अशोक गुप्ता (कोन) अरूण दूबे (सीटी) एडवोकेट विजय दूबे (पहाड़ी) कुंज बिहारी उपाध्याय राजन (मझवा) जय प्रकाश पटेल (पटेहरा) सीताराम कोल (राजगढ़) मनोज कुमार सिंह (सीखण) विनय कुमार सिंह (नारायनपुर) विद्याधर पटेल (जमालपुर) ब्लाक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बनाए गए हैं। ब्लाक अध्यक्षों के मनोनयन पर उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व क्षेत्रीय प्रभारी अवध क्षेत्र पूर्व विधायक भगवती प्रसाद चौधरी ने सभी नव निर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई देते हुए संगठन को मजबूत बनाने के लिए हर स्तर पर जुट जाने की अपील किया है। जबकि बधाइयां देने वालों में राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस इण्टक के राष्ट्रीय सचिव शशि भूषण दूबे कंचनीय, जिला कांग्रेस कमेटी उपाध्यक्ष राजधर दूबे, दीप चंद जैन, जिला पंचायत सदस्य एवं जिला उपाध्यक्ष ई कृष्ण गोपाल चौधरी जनार्दन प्रसाद पाठक, एवं पीसीसी सदस्य एवं जिला उपाध्यक्ष छोटे खान, जिला महासचिव मनीष दूबे, श्याम धर उपाध्याय, राजेश पटेल क्षविराज पाल जिला सचिव संतोष यादव,राम कृपाल मौर्य, रतन्श सिंह, संदीप तिवारी, एडवोकेट नरेश चौधरी शहर कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष राजन पाठक ने सभी नव निर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई देते हुए कांग्रेस नेतृत्व के प्रति आभार प्रकट किया है।

अपर जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जिला सैनिक बंधु की बैठक संपन्न

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

मिर्जापुर। अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0), शिव प्रताप शुक्ल की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में जिला सैनिक बन्धु बैठक आहूत की गई।बैठक में चारो तहसीलों के भूतपूर्व सैनिको/आश्रितो ने हिस्सा लिए और अपनी अपनी समस्याओं से अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0), को अवगत कराया। इस अवसर पर जनपद के तमाम अधिकारी एवं कर्मचारीगण भी मौजूद रहें। अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0), ने समस्त पूर्व सैनिकों/ आश्रितों की समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुनी और उनके निस्तारण हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिया। अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0), मीरजापुर यह भी आदेश दिया कि सभी प्रार्थना-पत्रों का जल्द से जल्द निस्तारण किया जाय। कार्यक्रम के संयोजक जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास अधिकारी कैप्टन (नौसेना) राजीव रंजन सिन्हा (अ0प्रा0) ने समस्त भूतपूर्व सैनिकों / आश्रितों तथा आये हुए अधिकारियों के आभार व्यक्त किया।

जनपद न्यायाधीश ने जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक के साथ जिला कारागार का किया निरीक्षण

मिर्जापुर। मा0 जनपद न्यायाधीश अनमोल पाल ने आज जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन व पुलिस अधीक्षक अभिनन्दन सहित अन्य पुलिस बल के साथ जिला कारागार पहुंचकर आकस्मिक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कारागार के बैरको में बन्द बन्दियों के झोला व बैग आदि को खंगाल कर देखा गया तत्पश्चात भोजनालय में पहुंचकर मौके पर बन रहे भोजन की गुणवत्ता को भी देखा गया। मा0 जनपद न्यायाधीश महोदय द्वारा कारागार के अस्पताल में पहुंचकर बीमार रोगियो से वार्ता कर दवा, इलाज व मिल रही अन्य सुविधाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। महिला बैरक में पहुंचकर निरीक्षण कर महिला बन्दियो से मिल रही सुविधाओ के बारे में व कुछ महिला बन्दी के साथ छोटे बच्चों के लिये दूध, बिस्किट आदि सुविधाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। उन्होने सभी बैरको में निरीक्षण के दौरान बन्दियो से कहा कि यदि उनके पास किसी कारणवश अधिवक्ता न हो तो वे कारागार अधीक्षक के माध्यम से आवेदन भेजवा दे उन्हे सरकारी वकील उपलब्ध कराया जायेगा। महिला बन्दियों के साथ रह रहे बच्चों को मा0 जनपद न्यायाधीश व जिलाधिकारी द्वारा नये कपड़े व चाकलेट प्रदान किया गया। इसके पूर्व कारागार अधीक्षक के कक्ष में लगाये गये सी0सी0टी0वी0 का फुटेज भी टी0वी0 पर देखा गया। इस दौरान अपर जनपद न्यायाधीश/ जिला विधिक सेवा प्राधिकरण लाल बाबू यादव, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट रतन्म श्रीवास्तव, अपर पुलिस अधीक्षक नितेश सिंह, क्षेत्राधिकारी नगर मनोज गुप्ता, जिला कारागार अधीक्षक उपस्थित रहें।

महिला चिकीत्सालय में सम्मान समारोह का किया गया आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

मिर्जापुर। केयर एंड क्योर फाउंडेशन की तरफ से जिला महिला चिकित्सालय में महिला स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम एवं महिला सम्मान समारोह का आयोजन दिनांक 21 मार्च 2024 को किया गया इस कार्यक्रम में डॉ शुभम सिंह (असिस्टेंट प्रोफेसर) द्वारा गर्भावस्था में सही खान-पान के महत्व को बताया गया साथ ही डाइटिशियन ज्योति सिंह द्वारा एनीमिया संबंधित समस्याओं एवं एनीमिया में सही खान-पान के महत्व के बारे में बताया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे मां विंध्यवासिनी स्वशासी राज्य मेडिकल कॉलेज के प्रधानाचार्य प्रोफेसर डॉ आर बी कमल एवं मंडलीय जिला चिकित्सालय के प्रमुख अधीक्षक - डॉ तरुण सिंह, जिला महिला चिकित्सालय के सीएमएस डॉक्टर संजय पांडे, गायनेकोलॉजी डिपार्टमेंट के एचओडी डॉ जूही देशपांडे एवं अस्पताल प्रबंधक - अनुज ठाकुर । कार्यक्रम में केयर एंड क्योर फाउंडेशन के वाइस प्रेसीडेंट डॉ राहुल सिंह, को-ऑर्डिनेटर स्वती मिश्रा, सचिव , नेहा बघेल , शांभवी, शिवानी, साक्षी, वंशिका उपस्थित थे।

मतदाता जागरूकता को लेकर शिक्षको की बैठक सम्पन्न

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। मंगलवार को माह मार्च 2024 की संकुल शिक्षक बैठक का आयोजन कम्पोजिट विद्यालय जोगिया मंदिर राबर्ट्सगंज पर किया गया है। बैठक का समय 3:00 बजे से 5:00 बजे तक था। आज की संकुल बैठकसंकुल गायत्री त्रिपाठी व रंजना पांडे के स्कूलों की बैठक आयोजित की गई थी । मंगलवार की बैठक के मुख्य अतिथि एस आर जी संजय मिश्रा व विनोद कुमार थे । आज की संकुल शिक्षक बैठक में मतदाता जागरूकता हेतु संकुल में आनंद त्रिपाठी के द्वारा मतदाताओं को सम्मानित किया गया जिसमें कुछ मतदाता 18 वर्ष के थे जो प्रथम बार मतदान करने जा रहे है । आज की बैठक में सभी शिक्षकों ने अपनी बेस्ट प्रैक्टिसेज का वीडियो और टी एल एम को सभी के साथ शेयर किया त् परीक्षा से पूर्व की तैयारी के लिए सभी ने अपने विद्यालय पर क्या कार्य योजना बनाई है।

लम्बित विवेचनाओं का विस्तृत रुप से वार्ता करते हुये करे निस्तारण:कालू सिंह

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। गुरुवार को अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) कालू सिंह द्वारा थाना रॉबर्ट्सगंज पर सर्किल नगर का अर्दली रुम किया गया । अर्दली रुम के दौरान अपर पुलिस अधीक्षक द्वारा विवेचना निस्तारण के सम्बंध में चलाये जा रहे अभियान के तहत थाने पर लम्बित विवेचनाओं के सन्बंध में विस्तृत रुप से वार्ता करते हुये लम्बित विवेचनाओं की समीक्षा की गई तथा विवेचनाओं का समय से निस्तारण करने हेतु सम्बंधित विवेचकों को निर्देशित किया गया साथ ही जनशिकायतों की सुनवाई कर तत्काल जाँच करने व विधिक निस्तारण सुनिश्चित करने हेतु भी निर्देश दिये गये । इसके अतिरिक्त अपर पुलिस अधीक्षक द्वारा लोकसभा चुनाव से संबंधित निरोधात्मक कार्रवाई आदि की समीक्षा, अधिक समय से लंबित विवेचनाओं के शीघ्र निस्तारण पर जोर देते हुए वांछित अभियुक्तों व वारंटियों की गिरफ्तारी करने, आईजीआरएस प्रार्थना पत्रों एवं शिकायती प्रार्थना पत्रों का त्वरित निस्तारण, रात्रि में चौराहे/तिराहे पर चेकिंग करके अपराधियों के संचरण पर रोक लगाने सहित अन्य अपराधिक गतिविधियों में संलिप्त अपराधियों का भौतिक सत्यापन करने, अवैध शराब एवं मादक पदार्थों के तस्करों व क्रय विक्रय करने वालों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने, थाने के मालों का निस्तारण तथा महिला संबंधी अपराधों में त्वरित गति से कार्रवाई करने के भी निर्देश दिए । इसके साथ ही शासन एवं उच्चाधिकारीगण द्वारा जारी आदेशों के अनुपालन एवं प्रचलित अभियानों के सम्बंध में भी आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये । इस मौके पर सर्किल नगर के सभी विवेचक/उपनिरीक्षक तथा अन्य कर्मचारीगण मौजूद रहे ।

जनपद के सभी विकास खण्डो में मतदाता जागरूकता अभियान के तहत गोष्ठी आयोजित कर मतदान के प्रति किया गया जागरूक

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

मिर्जापुर। लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 का मतदान दिवस जनपद में दिनांक 01.06.2024 को होना निर्धारित है। जिला निर्वाचन अधिकारी प्रियंका निरंजन के निर्देश के क्रम में जपनद के सभी तहसीलो व विकास खण्डो, नगर निकायो के अन्तर्गत अधिक से अधिक मतदान कराने के दृष्टिगत स्वीप कार्यक्रम के अन्तर्गत विविध कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। प्रभारी अधिकारी स्वीप/ मुख्य विकास अधिकारी विशाल कुमार की देखरेख में मतदान दिवस के दिन अधिक से अधिक मतदान करने हेतु लोगों को जागरूक किये जाने हेतु आज जनपद के सभी 12 विकास खण्डों में खण्ड विकास अधिकारियों के माध्यम से मतदाता जागरूकता गोष्ठी का आयोजन करते हुये अधिक से अधिक मतदान करने हेतु लोगों को जागरूक किया गया। इसी क्रम में एन0आर0एल0एम0 के समूहों के माध्यम से भी कुछ ग्रामों एवं विकास खण्ड मुख्यालय पर रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन कराते हुये लोगों मतदान दिवस के दिन ज्यादा से ज्यादा मतदान करने हेतु लोगों को जागरूक किया गया। इस अवसर पर खण्ड विकास अधिकारियों द्वारा समूह की महिलाओं से अपील करते हुये यह भी कहा कि अपने गांव क्षेत्रान्तर्गत सभी मतदाताओं को मतदान के महत्व के बारे में जानकारी देते हुये आगामी 01 जून 2024 को अपने मतदान केन्द्रो पर पहुंचकर अपने माताधिकार का प्रयोग करने हेतु लोगो को जागरूक करें ताकि जनपद में मतदान का प्रतिशत बढ़ाया जा सकें।

पाक्सो एक्टः दोषी शीतल प्रसाद को 3 वर्ष की कठोर कैद

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। साढ़े 7 वर्ष पूर्व नाबालिग लड़की के साथ हुए छेड़खानी के मामले में अपर सत्र न्यायाधीश / विशेष न्यायाधीश पाक्सो एक्ट सोनभद्र अमित वीर सिंह की अदालत ने बृहस्पतिवार को सुनवाई करते हुए दोषसिद्ध पाकर दोषी शीतल प्रसाद को 3 वर्ष की कठोर कैद एवं 10 हजार रूपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर एक माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। जेल में बिताई अवधि सजा में समाहित की जाएगी। वहीं अर्थदंड की धनराशि में से 8 हजार रूपये पीड़िता को मिलेगी। अभियोजन पक्ष के मुताबिक शक्तिनगर थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी पीड़िता की मां ने 25 अक्तूबर 2016 को कोर्ट में दिए धारा 156(3) सीआरपीसी के प्रार्थना पत्र में अवगत कराया था कि उसकी 14 वर्षीय नाबालिग बेटी 17 सितंबर 2016 को शाम 7 बजे पड़ोसन महिला के साथ ज्वालामुखी मंदिर दर्शन करने जा रही थी तभी रास्ते में सुनसान जगह पर शीतल प्रसाद पुत्र दीनबंधु उर्फ बंधुराम निवासी प्राइवेट बस स्टैंड शक्तिनगर ने उसकी नाबालिग बेटी के साथ छेड़छाड़ करने लगा तथा उसका हाथ पकड़ कर खींचने लगा। शोरगुल की आवाज सुनकर कई लोग आ गए तब बेटी की इज्जत बची और वह छोड़कर भाग गया। दूसरे दिन सुबह बेटी को लेकर थाने पर गई और तहरीर दी जिसपर पुलिस ने आरोपी शीतल प्रसाद को दो दिन तक थाने पर बैठाने के बाद छोड़ दिया। तब एसपी सोनभद्र को रजिस्टर्ड डाक से सूचना दिया, फिर भी कोई कार्रवाई नहीं की गई। कोर्ट के आदेश पर पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर मामले की विवेचना किया। विवेचना के दौरान पर्याप्त सबूत मिलने पर विवेचक ने कोर्ट में छेड़खानी और पाक्सो एक्ट में चार्जशीट दाखिल किया था। मामले की सुनवाई के दौरान अदालत ने दोनों पक्षों के अधिवक्ताओं के तर्कों को सुनने, गवाहों के बयान एवं पत्रावली का अवलोकन करने पर दोषसिद्ध पाकर दोषी शीतल प्रसाद को 3 वर्ष की कठोर कैद एवं 10 हजार रूपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर एक माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। जेल में बिताई अवधि सजा में समाहित की जाएगी। वहीं अर्थदंड की धनराशि में से 8 हजार रूपये पीड़िता को मिलेगी। अभियोजन पक्ष की तरफ से सरकारी वकील दिनेश कुमार अग्रहरी, सत्य प्रकाश त्रिपाठी एवं नीरज कुमार सिंह ने बहस की।

शिक्षक की हत्या के विरोध मे दूसरे दिन भी ठप रहा मूल्यांकन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। सभी संगठनों के शिक्षक नेताओं की अगुवाई मे नगर क्षेत्र मे नारे बाजी कर जताया विरोध मृतक शिक्षक के परिजनों को एक करोड़ रुपया मुवायजा के साथ महिला शिक्षिकाओं के साथ महिला पुलिस की ड्यूटी लगाने की रखी मांग सोनभद्र- जनपद वाराणसी से यूपी बोर्ड परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाएं लेकर मुजफ्फरनगर गए सहायक अध्यापक धर्मेंद्र कुमार की उन्हीं के सुरक्षा मे लगे सुरक्षा कर्मी सिपाही चंद्र प्रकाश द्वारा हत्या किए जाने के विरोध में जनपद दूसरे दिन भी दोनो मूल्यांकन केन्द्रों पर मूल्यांकन कार्य पुरी तरह ठप रहा। राजा शारदा महेश इण्टर कॉलेज एवं राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज राबर्ट्सगंज के कोठार के ताले तक नही खोले गये। सभी परीक्षकों द्वारा सामूहिक रूप से मूल्यांकन का बहिष्कार किया गया। माध्यमिक वित्त विहीन शिक्षक महासभा,उत्तर प्रदेश संगठन, माध्यमिक शिक्षक संघ एवं राजकीय शिक्षक संघ उत्तर प्रदेश मूल संघ एवं पाण्डेय गुट समेत सभी संगठनों द्वारा सामूहिक रूप से पीड़ित को न्याय दिलाए जाने की मॉग की गई। इस सम्बन्ध में मुख्यमंत्री को सम्बोधित ज्ञापन जिला विद्यालय निरीक्षक राजेन्द्र प्रसाद यादव को सौपा गया।सभी संगठनों द्वारा एक स्वर से मॉग की गई कि दोषी को कठोरतम सजा के साथ तथा पीड़ित परिवार को एक करोड रुपए मुआवजा राशि सरकार द्वारा दी जाए।साथ ही उत्तर पुस्तिका पहुँचाने व लाने की जिम्मेदारी से शिक्षकों को मुक्त किया जाय। साथ ही लोकसभा चुनाव मे महिला शिक्षिकाओं के साथ किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना से बचने के लिए महिला शिक्षिकाओं के साथ महिला पुलिस कर्मी की ड्यूटी लगाए जाने की जिलाधिकारी से मांग की गयी।आक्रोशित शिक्षकों द्वारा दूसरे दिन राबर्ट्सगंज नगर क्षेत्र मे अपनी मांगो के लिए जमकर नारेबाजी किया,पुनः शिक्षकों का हूजूम बढौली चौराहा पहुंचा,जहाँ पुलिस प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी करते हुए पुनः जी जी आई सी कालेज पर समाप्त किया गया।साथ कहा गया कि जब तक मांगे पुरी नही होती तब आंदोलन जारी रखा जायेगा।

हौसला बंद चोरो ने एक ही रात मे तीन स्थानो पर लाखों से अधिक नगदी जेवर की चोरी, मचा हडकंप

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

गुरमा, सोनभद्र। चोपन थाना अन्तर्गत गुरमा चौकी क्षेत्र के ग्राम पंचायत मारकुंडी मे ओबरी टोले मे सोमवार की बिती रात्र आज्ञात चोरो का आतंक रहा, हौसला बंद चोरो ने ओबरी निवासी दीनदयाल देव पांडेय पुत्र स्वः वेद देव पांडेय के मकाना का ताला तोड़कर एक लाख दस हजार नगदी समेत सोने की चैन एव अंगुठी समेत अन्य सामान चुरा ले गये। पीड़ित के मुताबिक उस रात अपने रिस्तेदार के यहा गया हुआ था जब सुबह अपने आवास पहुँचा तो चोरी की घटना देख हैरान रह गया घटना की तत्काल सूचना मेरे पीआरपी 112 समेत गुरमा पुलिस चौकी को दी है।वही पास के ही रहने वाली सलमा खातुन पतनी मुन्वर खाँ के घर मे चोरो ने घुसकर हजारो की नगदी समेत जेवरात चूरा ले गए। पास ही रहने वाले मो0 असगर टायर मिस्री के दुकान मे लोहे की रीम,कमप्रेसर मशीन, प्रेसर जक समेत अन्य अपकरण चोरी कर ले गए। सभी ने सूचना पुलिस को दी है।इससे पूर्व ओबरी टोले एव अवई टोले मे लाखो की नगदी समेत सोने के आभूषण भी चोरी हो चूका है जिसका खुलासा आज तक नही होने से चोरो मनोबल बढा हुआ है।

थाना कोन पुलिस द्वारा भिन्न -भिन्न स्थानों से 03 नफर वारंटीगण को किया गया गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। आगामी लोक सभा चुनाव-2024 के दृष्टिगत पुलिस अधीक्षक सोनभद्र के निर्देशन मे वांछित/वारण्टी अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) तथा क्षेत्राधिकारी ओबरा के पर्यवेक्षण में आज दिनांक 19.03.2024 को थाना कोन पुलिस द्वारा अलग-अलग अभियोगों से सम्बन्धित 03 नफर वारंटी अभियुक्तों को गिरफ्तार कर मा0 न्यायालय भेजा गया । गिरफ्तार अभियुक्तगण का विवरण- 1. अविलेश अली पुत्र लेहाज अली निवासी ग्राम बरवाडीह थाना कोन जनपद सोनभद्र । 2. अरविन्द सिंह खरवार पुत्र ब्रह्मजीत निवासी ग्राम बरावाडीह, थाना कोन जनपद सोनभद्र । 3. डॉक्टर उर्फ सुशील पुत्र विद्यासागर निवासी ग्राम हर्री टोला सलैयाडीह थाना कोन जनपद सोनभद्र गिरफ्तारी करने वाली टीम का विवरण- 1. प्रभारी निरीक्षक लक्ष्मण पर्वत थाना कोन, जनपद सोनभद्र। 2. उ0नि0 धर्मदेव यादव थाना कोन, जनपद सोनभद्र। 3. हे0का0 रामदीन थाना कोन जनपद सोनभद्र। 4. हे0का0 संजय चौहान, थाना कोन जनपद सनभद्र। 5. का0 तुफान सिंह थाना कोन जनपद सोनभद्र ।

सात-दिवसीय विशेष शिविर का सातवां दिन समापन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ एनटीपीसी परिसर शक्तिनगर राष्ट्रीय सेवा योजनाः इकाई प्रथम एवं तृतीय के तत्वावधान में संचालित सात-दिवसीय विशेष शिविर (दिन-रत) के सातवें और अंतिम गुरुवार को चिल्काडांड पंचायत भवन में समापन समारोह का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में प्रोफेसर श्रद्धानंद जी, पूर्व निदेशक महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ एनटीपीसी शक्तिनगर परिसर ने आनलाईन सहभाग किया। आपने स्वयंसेवकों से इन्सानियत धर्म को ग्रहण करने का आह्वान किया। आपने कहा कि इन्सान के पास संस्कृति है जो जानवर के पास नहीं है, इसलिए इंसान भी पूजे जाते हैं। आपने खुद स्वयंसेवक होने पर गर्व जताया और सभी को ज्ञानार्थ विद्यापीठ में आने और सेवार्थ समाज में जाने का मंत्र बताया। इस क्रम में विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ रामकिर्ती सिंह पूर्व कार्यक्रम अधिकारी, शक्तिनगर परिसर ने आनलाईन सहभाग में स्वयंसेवकों को ग्रामीण भारत के विकास के लिए कार्य करने पर जोर दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ प्रदीप कुमार यादव, प्रभारी महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ शक्तिनगर परिसर ने कहा कि भारतीय गांवों में अभी स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवहन और बालिका सशक्तिकरण की समस्या चुनौतीपूर्ण बनी हुई है। इसके निमित्त एनएसएस महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आपने एनएसएस इकाई प्रथम और तृतीय द्वारा संचालित सात-दिवसीय विशेष शिविर (दिन-रत) के सफलतापूर्वक आयोजन के लिए सहभागी 100 स्वयंसेवकों को अनन्त शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम का संचालन कर रहें डॉ विनोद कुमार पाण्डेय कार्यक्रम अधिकारी इकाई तृतीय ने अध्यक्ष के समक्ष सात-दिन में आयोजित गतिविधियों का एक लेखा-जोखा प्रस्तुत किया जिसे सभागार ने एक स्वर से स्वीकार कर लिया। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों डॉ अनील कुमार दूबे, डॉ छोटेलाल प्रसाद, डॉ मनोज कुमार गौतम, डॉ अविनाश कुमार दुबे, श्री अभिषेक कुमार, श्री सिद्धार्थ आनंद के प्रति डॉ प्रभाकर लाल, कार्यक्रम अधिकारी इकाई प्रथम ने धन्यवाद ज्ञापित किया। डॉ विनोद कुमार पाण्डेय ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के पश्चात हुआ। विशेष शिविर 15 मार्च 2024 से 21 मार्च 2024 तक पंचायत भवन चिल्काडांड ग्राम में 100 स्वयंसेवक और 02 कार्यक्रम अधिकारी डॉ प्रभाकर लाल और डॉ0 विनोद कुमार पाण्डेय के निर्देशन में सम्पनन हुआ जिसमें संदीप, अनीष, विनित, मनीष, शिवम, विनित, संध्या, पूजा, पूनम, नम्रता, सपना, अस्मिता, ग्रेसी, खुशी जयसवाल, कृष्णा का सराहनीय योगदान रहा।

फ्री में कब, कहां और कैसे देखें चेन्नई सुपरकिंग्स बनाम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु मैच लाइव जानें यहां

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। आईपीएल 2024 का शुक्रवार को आगाज होगा। टूर्नामेंट का उद्घाटन मैच चेन्नई सुपरकिंग्स और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के बीच एमए चिदंबरम स्टेडियम में खेला जाएगा।गत चैंपियन चेन्नई सुपरकिंग्स और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के बीच शुक्रवार को आईपीएल 2024 का पहला मैच एमए चिदंबरम स्टेडियम में खेला जाएगा। इस मैच का लाइव प्रसारण और स्ट्रीमिंग आप कब कहां और कैसे देख सकते हैं यहां जानकारी प्राप्त करें। आरसीबी के पास चेपॉक में अपना प्रदर्शन सुधारने का शानदार मौका होगा। चेन्नई सुपरकिंग्स का आरसीबी के खिलाफ रिकॉर्ड शानदार है। आईपीएल इतिहास में चेन्नई सुपरकिंग्स और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के बीच कुल 31 मैच खेले गए हैं। सीएसके यहां स्पष्ट विजेता नजर आता है, जिसने 20 मुकाबले जीते। आरसीबी की टीम 10 मैच जीतने में कामयाब रही। एक मैच बेनतीजा रहा। एमए चिदंबरम स्टेडियम में सीएसके का आरसीबी के खिलाफ रिकॉर्ड शानदार है। सीएसके ने इस मैदान पर 7-1 की बढ़त बना रखी है। रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर ने चेपॉक स्टेडियम में 2008 से कोई मुकाबला नहीं जीता है। आरसीबी इस कसक को आगामी मुकाबले में तोड़ना चाहेगी। बता दें कि जब सीएसके और आरसीबी के बीच आखिरी भिड़ंत हुई थी जब एमएस धोनी के नेतृत्व वाली येलो ब्रिगेड ने 8 विकेट की आसान जीत दर्ज की थी। चलिए जानते हैं कि चेन्नई सुपरकिंग्स और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के बीच मुकाबले का लाइव प्रसारण और ऑनलाइन स्ट्रीमिंग आप कब, कहां और कैसे देख सकते हैं।के बीच आईपीएल 2024 का पहला 22 मार्च यानी शुक्रवार को चेन्नई के एमए चिदंबरम स्टेडियम में खेला जाएगा। के बीच आईपीएल 2024 का पहला मैच भारतीय समयानुसार शाम 7:30 से शुरू होगा। टॉस आधे घंटे पहले होगा।

स्टार स्पिन गेंदबाज ने लिया टूर्नामेंट से नाम वापस

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। राजस्थान रायल्स के लेग स्पिनर एडम जांपा निजी कारणों से इंडियन प्रीमियर लीग (आइपीएल) से हट गए हैं। आस्ट्रेलिया के स्पिनर जंपा को राजस्थान रायल्स ने पिछले वर्ष की नीलामी से पहले 1.5 करोड़ रुपये में अपनी टीम में बनाए रखा था। आईपीएल 2024 के आगाज से ठीक पहले राजस्थान रॉयल्स को बड़ा झटका लगा है। राजस्थान के स्पिन गेंदबाज एडम जांपा ने निजी कारणों का हवाला देते हुए टूर्नामेंट से अपना नाम वापस ले लिया है। जांपा ने पिछले सीजन खेले 6 मैचों में कुल 8 विकेट अपने नाम किए थे। राजस्थान को अपने पहले मैच में लखनऊ से भिड़ना है।

आईपीएल फाइनल में पहुंचने के बाद आरसीबी क्यों नहीं जीत पाती खिताब 3 मौकों पर पड़ चुकी है करारी चोट

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। आरसीबी 8 बार प्लेऑफ के लिए क्वालिफाई कर चुकी है। जिसमें 3 बार इस टीम ने फाइनल भी खेला है। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु किन 3 टीमों से हारी है।2009 में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर ने डेक्कन चार्जर्स के खिलाफ अपना पहला फाइनल खेला था। इस मैच में एडम गिलक्रिस्ट की कप्तानी में डेक्कन ने आरसीबी को 58 रनों से हराकर खिताब अपने नाम किया था। 2016 में विराट कोहली की कप्तानी में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर फिर एक बार फाइनल में पहुंची थी। इस बार फाइनल

को आईपीएल 2024 में खिताब जीतने की उम्मीद है। आरसीबी उन चुनिंदा टीमों में शामिल है जिसने अब तक एक बार भी खिताब नहीं जीता है। खिताब के बेहद करीब पहुंचने के बावजूद वो चूक गई। आरसीबी की फैन फॉलोइंग जबरदस्त है लेकिन अब तक खिताब नहीं जीतने का मलाल उसे जरूर है। आरसीबी की महिला टीम ने हाल ही में डब्ल्यूपीएल खिताब अपने नाम किया मजबूत टीम होने के बावजूद भी खराब लक के कारण आरसीबी एक भी बार आईपीएल का खिताब नहीं जीत सकी है। ऐसे में साल 2024 में आरसीबी के फैंस को फिर एक बार अपनी टीम से काफी ज्यादा उम्मीदें है आइए जानते हैं आईपीएल फाइनल में आरसीबी चार्जर्स ने पहले खेलते हुए 6 विकेट पर 143 रन बनाएं थे। जवाब में अनिल कुंबले की कप्तानी वाली आरसीबी 9 विकेट पर सिर्फ 137 रन ही बना सकी थी। इस मैच में आरसीबी को 6 रनों से हराकर डेक्कन चार्जर्स पहली बार आईपीएल चैंपियन बना था। चेनन्ई सुपर किंग्स और रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के बीच 2011 का आईपीएल फाइनल खेला गया था। इस मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए धोनी की कप्तानी वाली सीएसके ने 5 विकेटों पर 205 रन बनाए थे। जवाब में डेनियल विटोरी की कप्तानी वाली आरसीबी 8 विकेट पर सिर्फ 147 रन ही बना सकी थी। 2011 आईपीएल फाइनल में सीएसके में आरसीबी का मुकाबला डेविड वॉर्नर की कप्तानी वाली सनराईजर्स हैदराबाद से हुआ था। फाइनल में पहले बल्लेबाजी करते हुए एसआरएच ने 7 विकेटों पर 208 रन बनाया था। जवाब में आरसीबी की टीम 7 विकेटों पर सिर्फ 200 रन बना पाई थी। आरसीबी को 8 रनों से हराकर सनराईजर्स हैदराबाद पहली बार आईपीएल चैंपियन बना था 2024 में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की महिला टीम ने पहली बार आईपीएल का खिताब जीता है। ऐसे में फैंस को पुरुष आरसीबी टीम से भी यह उम्मीद है कि वो आईपीएल का खिताब जीतेंगें। अब देखना होगा कि 2024 का आईपीएल फाइनल क्या रिजल्ट लेकर आता है।

चिंगारी लग चुकी है अब आग मुंबई टीम के कप्तानी विवाद को लेकर बड़ी बात कह गए हरभजन सिंह

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। मुंबई इंडियंस के खेमे में सबकुछ ठीक नहीं चल रहा है। आईपीएल 2024 के लिए हार्दिक पांड्या को कप्तानी सौंपने के फैसले का फैन्स जमकर विरोध कर रहे हैं। हाल ही में मुंबई ने एक वीडियो भी शेयर किया था, जिसमें रोहित शर्मा और हार्दिक गले मिलते हुए बिल्कुल सहज नजर नहीं आए थे। रोहित के हाव-भाव को देखकर लग रहा था कि वह टीम मैनेजमेंट के फैसले से खुश नहीं हैं। कप्तानी के इस विवाद को लेकर अब मुंबई के पूर्व खिलाड़ी हरभजन सिंह का भी बयान सामने आया है। मुंबई इंडियंस ने आईपीएल 2024 के लिए

टीम की कमान हार्दिक पांड्या के हाथों में सौंपी है। रोहित शर्मा 10 साल बाद इंडियन प्रीमियर लीग में बतौर खिलाड़ी मैदान पर उतरेंगे। हरभजन सिंह ने रोहित की जगह हार्दिक को टीम की कमान दिए जाने के फैसले पर अपनी राय रखी है। भज्जी का कहना है कि मुंबई एक साल के लिए इस फैसले को टाल सकती थी। भज्जी ने आगे कहा, ठहालांकि, एक चीज जरूर है, पांच बार टीम को चैंपियन बनाने वाले, लगभग वर्ल्ड कप को जीतने वाले कप्तान को हटाए जाना काफी चौंकाने वाला है। शायद यह फैसला एक साल के लिए टाला जा सकता था। काबिलियत के हिसाब से हार्दिक पांड्या काफी बढ़िया कप्तान हैं।

शुरू होगा फटाफट क्रिकेट का रोमांच, आईपीएल की चमचमाती ट्रॉफी को पाने के लिए होगी 10 टीमों के बीच जंग

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। चुनावी महासमर के बीच शुक्रवार से देश में फटाफट क्रिकेट का खुमार छाएगा। चेनन्ई में शुक्रवार को पांच बार की चैंपियन चेनन्ई सुपर किंग्स और रायल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के बीच मुकाबले से इंडियन प्रीमियर लीग (आइपीएल) के 17वें सत्र का बिगुल बजेगा। इंडियन प्रीमियर लीग के 17वें सीजन का आगाज आज से होने जा रहा है। आईपीएल की ट्रॉफी को पाने के लिए कुल 10 टीमें एक-दूसरे से भिड़ती हुई नजर आएंगी। टूर्नामेंट के पहले मैच में चेनन्ई सुपर किंग्स की भिड़ंत रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के साथ होगी। बीसीसीआई ने लोकसभा चुनाव को देखते हुए अभी सिर्फ 21 मैचों का शेड्यूल जारी किया है। अगले दो महीने तक चलने वाले इस जलसे में 10 टीमें चमचमाती ट्राफी के लिए जोर लगाएंगी। फाइनल मुकाबला 20 मई को खेला जाएगा। लोकसभा चुनाव के कारण आइपीएल के पहले चरण के कार्यक्रम की घोषणा की गई थी, जिसके मुकाबले सात अप्रैल तक खेले जाएंगे। बीसीसीआइ शेष कार्यक्रम जल्द घोषित करेगा। ये दूसरी बार होगा जब लोकसभा चुनाव के साथ आइपीएल का आयोजन भारत में ही होगा। उद्घाटन मुकाबले से पहले एमए चिदंबरम स्टेडियम में रंगारंग कार्यक्रम होगा, जिसमें बालीवुड अभिनेता अक्षय कुमार, टाइगर श्राफ, संगीतकार एआर रहमान व गायक सोनू निगम प्रस्तुति देंगे।

कौन है चेन्नई सुपरकिंग्स के कप्तान रुतुराज गायकवाड़ की पत्नी उत्कर्षा पवार क्रिकेट में खूब कमा चुकी हैं नाम

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। आईपीएल 2024 के लिए चेन्नई सुपरकिंग्स ने रुतुराज गायकवाड़ को कप्तान बनाया है।

सीएसके ने गुरुवार को पुष्टि की है कि एमएस धोनी ने कमान रुतुराज गायकवाड़ को सौंपी। गायकवाड़ की आईपीएल यात्रा सीएसके के साथ शानदार रही है और उन्हें धोनी का उत्तराधिकारी माना जा रहा था। चेन्नई सुपरकिंग्स के नए कप्तान रुतुराज गायकवाड़ की पत्नी उत्कर्षा पवार भी क्रिकेट खेल चुकी हैं। रुतुराज गायकवाड़ और उत्कर्षा पवार की शादी 3 जून 2023 को हुई थी। उत्कर्षा ने महाराष्ट्र के लिए क्रिकेट खेला है और वो दाएं हाथ से मध्यम तेज गेंदबाजी करती थीं। उत्कर्षा का नाम विमेंस प्रीमियर लीग की नीलामी में आया था। उनकी बेस प्राइस 10 लाख रुपये थी। रुतुराज गायकवाड़ की पत्नी उत्कर्षा पवार भी एक क्रिकेटर रह चुकी हैं। वो महाराष्ट्र टीम का कई स्तर पर प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं। उत्कर्षा ऑलराउंडर हैं। उनकी दाएं हाथ की मध्यम तेज गति की गेंदबाजी काफी उपयोगी साबित होती थी। 2015 से लेकर 2018 तक उन्होंने महाराष्ट्र वेस्ट जोन अंडर-19 और वेस्ट जोन अंडर-23 का प्रतिनिधित्व किया। टीम इंडिया सी के लिए खेलना भी उत्कर्षा के लिए गर्व वाला पल रहा। जब से रुतुराज गायकवाड़ को कप्तान बनाया गया तो गूगल पर उनकी पत्नी के बारे में लोग खोज करने लगे। चलिए हम आपको रुतुराज गायकवाड़ की पत्नी के बारे में बताते हैं। रुतुराज गायकवाड़ ने 3 जून 2023 को उत्कर्षा पवार के साथ शादी की।

ना धोनी, ना रोहित और ना कोहली16 साल के आईपीएल इतिहास में पहली बार होगा ऐसा, मायूस हो गए हैं तमाम क्रिकेट फैन्स

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। आईपीएल 2024 के महासंग्राम की शुरुआत से पहले ही फैन्स को मायूस कर देने वाली खबर सामने आई। तमाम क्रिकेट प्रेमियों के चहिते कप्तान एमएस धोनी ने चेनन्ई सुपर किंग्स की कैप्टेंसी छोड़ने का एलान कर दिया। आईपीएल 2024 के आगाज से ठीक पहले एमएस धोनी ने चेनन्ई सुपर किंग्स की कप्तानी छोड़ने का फैसला लिया। माही ने अपनी जगह सीएसके की कमान रुतुराज गायकवाड़ के हाथों में सौंप दी है। वहीं मुंबई इंडियंस इस बार हार्दिक पांड्या की कप्तानी में खेलते हुई नजर आएगी। रोहित शर्मा 10 साल बाद बतौर खिलाड़ी टूर्नामेंट में खेलते दिखाई देंगे। माही ने इंडियन प्रीमियर लीग के 17वें सीजन के लिए सीएसके की बागडोर रुतुराज गायकवाड़ के हाथों में सौंप दी। धोनी के फैसले के बाद आईपीएल 2024 में पहली बार कुछ ऐसा होगा, जो इस लीग के 16 साल में नहीं हो सका है। आईपीएल 2024 की शुरुआत से पहले ही धोनी ने फैन्स का दिल तोड़ दिया है। माही की चतुर कप्तानी इस सीजन देखने को नहीं मिलेगी। 16 साल के इंडियन प्रीमियर लीग के इतिहास में यह पहला मौका होगा, जब ना तो धोनी, ना रोहित और ना ही विराट कोहली कप्तानी करते हुए नजर आएंगे। आईपीएल में इससे पहले ऐसा कभी नहीं हुआ है, जब यह तीनों दिग्गज महज खिलाड़ी के तौर पर टूर्नामेंट में खेले हों। एमएस धोनी ने आईपीएल 2024 की शुरुआत से ठीक एक दिन पहले चेनन्ई सुपर किंग्स की कमान रुतुराज गायकवाड़ के हाथों में सौंप दी। माही ने अपनी कप्तानी में सीएसके को पांच बार चैंपियन बनाया। पिछले सीजन गुजरात टाइटंस को फाइनल मुकाबले में पटखनी देते हुए धोनी ने चेनन्ई को पांचवीं बार चैंपियन बनाया था। रोहित शर्मा आईपीएल 2024 में धोनी की तरह बतौर खिलाड़ी खेलते हुए नजर आएंगे। मिनी ऑक्शन से ठीक पहले मुंबई टीम ने रोहित की जगह हार्दिक पांड्या को अपना नया कप्तान नियुक्त किया था। 10 साल बाद हिटमैन आईपीएल में खिलाड़ी के तौर पर खेलते हुए दिखाई देंगे। विराट कोहली ने साल 2021 में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर की कप्तानी छोड़ दी थी। 2021 के बाद से आरसीबी की कमान फाफ डुप्लेसी संभाल रहे हैं।

कुछ कार्य जिसकी पिछले कुछ दिनों से प्लानिंग चल रही है, आज शुरू हो सकता है, जिससे आपको आर्थिक स्थिति में लाभ होगा। व्यापार-व्यवसाय में परिवर्तन की योग बन रहे हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से आज का दिन ठीक रहेगा।

परिवार में कोई नया सदस्य आ सकता है। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव देखने को मिलेगा। व्यापार आदि में सहयोगी पार्टनर के माध्यम से आय के नए स्रोत बनेंगे। परिवार में धार्मिक आयोजन से आध्यात्मिक माहौल महसूस होगा।

यात्रा आदि पर बाहर जा सकते हैं। यात्रा में सावधानी बरतें, नहीं तो आपको नुकसान हो सकता है। साथ ही परिवार में किसी अपने के स्वास्थ्य से आप चिंतित रह सकते हैं। व्यापार-व्यवसाय में बड़ा जोखिम आज न उठाएं।

आपका मन अशांत रहेगा। कार्य की अधिकता के कारण थकावट आदि महसूस होगी। व्यापार-व्यवसाय में आज कोई बड़ा फैसला आप ले सकते हैं, जिसका आगामी परिणाम सुखद होगा।

किसी बात को लेकर परिवार में परेशानी बढ़ सकती है, लेकिन आप अपनी कुशलता से उसे हल करने में सफल होंगे। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। व्यापार-व्यवसाय में लाभ के योग बनेंगे।

नौकरी आदि के लिए यदि प्रयास कर रहे हैं तो, आपको सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य आपका ठीक रहेगा, परंतु परिवार में माता-पिता का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। व्यापार-व्यवसाय में आर्थिक तौर पर कोई बड़ी मदद आज आपको मिल सकती है।

कोई महत्वपूर्ण कार्य न होने से आप मानसिक तौर से परेशान रह सकते हैं। आर्थिक स्थिति के कारण आपको किसी से मदद मांगनी पड़ सकती है। व्यापार-व्यवसाय में भी इस समय गिरावट महसूस होगी।

भागदौड़ के कारण शारीरिक दृष्टि से आप परेशान होंगे। साथ ही मौसम के कारण स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। आज किसी विशिष्ट व्यक्ति से मुलाकात होने से आपको आर्थिक तौर से लाभ हो सकता है।

परिवार के लोग सहयोग करेंगे। व्यापार-व्यवसाय में अपने साथियों के विरोध के कारण आपको बड़ा नुकसान हो सकता है। आज वाहन आदि के प्रयोग में सावधानी बरतें। साथ ही पैतृक संपत्ति में आपको आपना हिस्सा मिल सकता है।

स्वास्थ्य को लेकर आप परेशान हो सकते हैं। साथ ही नौकरी आदि में अधिकारी वर्ग से मतभेद बढ़ने से आपकी परेशानी बढ़ेगी। आज आप बाहर की यात्रा आदि पर जाएं तो, वाहन आदि का प्रयोग संभाल कर करें।

किसी अपने के द्वारा आपको कार्यक्षेत्र में बड़ा काम मिल सकता है, जिस कारण मन प्रसन्न रहेगा। साथ ही परिवार में माहौल अच्छा रहेगा, पत्नी व बच्चे आपके साथ आज कहीं बाहर घूमने जा सकते हैं।

आपके लिए लाभदायक रहेगा। व्यापार में लाभ होगा, कोई नया वाहन या मकान आदि खरीदने की योजना बन सकती है।

पाकिस्तान की पूर्व कप्तान जावरिया खान ने लगाया 15 साल लंबे करियर पर ब्रेक, भावुक पोस्ट के साथ इंटरनेशनल क्रिकेट को कहा अलविदा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। पाकिस्तान की पूर्व कप्तान जावरिया खान ने 15 साल लंबे इंटरनेशनल क्रिकेट पर फुल स्टॉप लगा दिया है। जावरिया ने 35 साल की उम्र में इंटरनेशनल क्रिकेट को अलविदा कहा। जावरिया ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर भावुक पोस्ट शेयर किया। हालांकि, पाकिस्तान की स्टार बैटर विदेशी लीग में रंग जमाती हुई नजर आएगी। पाकिस्तान की पूर्व कप्तान जावरिया खान ने इंटरनेशनल क्रिकेट को अलविदा कह दिया है। जावरिया खान ने साल 2008 में इंटरनेशनल क्रिकेट में अपना डेब्यू किया था। जावरिया ने पाकिस्तान की ओर से कुल 116 वनडे मैच खेले। इस दौरान खेली 113 पारियों में जावरिया ने 28.56 की औसत से 2885 रन बनाए। स्टार बैटर ने अपने एकदिवसीय करियर में दो शतक और 15 अर्धशतक जमाए। जावरिया खान ने साल 2008 में इंटरनेशनल क्रिकेट में अपना डेब्यू किया था। जावरिया ने पाकिस्तान की ओर से कुल 116 वनडे मैच खेले। इस दौरान खेली 113 पारियों में जावरिया ने 28.56 की औसत से 2885 रन बनाए। स्टार बैटर ने अपने एकदिवसीय करियर में दो शतक और 15 अर्धशतक जमाए। जावरिया ने अपने टी-20 इंटरनेशनल करियर का आगाज साल 2009 में किया था। क्रिकेट के सबसे छोटे फॉर्मेट में जावरिया ने खेले 112 मैचों में 2018 रन जड़े। टी-20 क्रिकेट में जावरिया ने 10 फिफ्टी जमाई। बल्ले के साथ-साथ जावरिया ने गेंद से भी कमाल दिखाया। वनडे में जावरिया ने 17 और टी-20 में 11 विकेट अपने नाम किए। जावरिया खान पाकिस्तान की ओर वनडे और टी-20 क्रिकेट में सर्वाधिक रन बनाने वाली दूसरी बैटर हैं। टीम की ओर से जावरिया से ज्यादा रन सिर्फ बिस्माह मारूफ ने बनाए हैं। जावरिया ने पाकिस्तान की तरफ से चार वनडे वर्ल्ड कप में हिस्सा लिया। इसके साथ ही वह आठ टी-20 विश्व कप में टीम का हिस्सा भी रहीं। जावरिया ने पाकिस्तान की 17 वनडे और 16 टी-20 मैचों में कप्तानी की। जावरिया साल 2010 और 2014 के एशियन गेम्स में गोल्ड मेडल जीतने वाली पाकिस्तान टीम का भी हिस्सा रहीं।

'शैतान' ने तोड़ा फाइटर का रिकॉर्ड, 14वें दिन कमाई में छोड़ा पीछे

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। अजय देवगन, आर माधवन और ज्योतिका की सुपरनेचुरल हॉरर थ्रिलर शैतान की शानदार कमाई का सिलसिला जारी है। इस मूवी ने अपनी लाजवाब कहानी से दर्शकों का दिल जीत लिया है। यही कारण है जो शैतान बॉक्स ऑफिस पर भी धमाका करती हुई नजर आ रही है। सुपरनेचुरल हॉरर थ्रिलर फिल्म शैतान अपने धमाकेदार प्रदर्शन के दम पर बॉक्स ऑफिर पर कमाल कर के दिखाया है। रिलीज के दो सप्ताह में कमाई के मामले में अजय देवगन और आर माधवन की ये फिल्म हर रोज धमाका कर रहे हैं। ऐसे में 14वें दिन के कलेक्शन में इस मूवी ने फाइटर को पछाड़ दिया है। इस बीच शैतान ने रिलीज के दो सप्ताह पूरे कर लिए हैं। ऐसे में फिल्म के 14वें दिन के बॉक्स ऑफिस कलेक्शन की डिटेल्स सामने आ गई है। जिसके मुताबिक शैतान ने सुपरस्टार ऋतिक रोशन की इस साल रिलीज फिल्म फाइटर को पीछे छोड़ दिया है। 25 जनवरी 2024 को ऋतिक रोशन, अनिल कपूर और दीपिका पादुकोण की फिल्म फाइटर को बड़े पर्दे पर रिलीज किया गया। अच्छी शुरूआत के बाद ये एरियल एक्शन थ्रिलर ढ़ीली पढ़ गई और कमाई में गिरावट आने लगे। लेकिन वहीं दूसरी तरफ शैतान अब भी बॉक्स ऑफिस पर अपनी पकड़ बनाए हुए है। बॉलीवुड हंगामा की रिपोर्ट के अनुसार ऋतिक की फाइटर ने रिलीज के 14वें दिन बॉक्स ऑफिस पर करीब 2.60 करोड़ का बिजनेस किया। इसकी तुलना में अब अजय देवगन की हॉरर थ्रिलर शैतान ने 14वें दिन करीब 2.70 करोड़ का कारोबार कर लिया है। अब इसका नेट कलेक्शन करीब 118 करोड़ हो गया है। जिस तरह से बॉक्स ऑफिस पर शैतान ने कमाई के मामले में गर्दा उड़ाया है, वह काबिल ए तारीफ है। रिलीज के दूसरे सप्ताह में बेशक मूवी के कलेक्शन में गिरावट आई है, लेकिन उसमें निरंतरता बनी रही है।

जब छोटे शहर से होते हैं स्वातंत्र्य वीर सावरकार के पोस्टर पर खुद को देखकर भावुक हुईं अंकिता लोखंडे

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
मुंबई। फिल्म स्वातंत्र्य वीर सावरकर के पोस्टर पर इन दिनों अंकिता लोखंडे नजर आ रही हैं। टीवी से लेकर पोस्टर तक पहुंचने का सफर उनके लिए काफी लंबा रहा है। वह कहती हैं कि जब आप छोटे शहर से होते हैं और इस बड़ी सी इंडस्ट्री का हिस्सा बनकर पोस्टर तक पहुंचते हैं, तो बहुत खुशी मिलती है। अंकिता लोखंडे फिल्म स्वातंत्र्य वीर सावरकर में नजर आने वाली हैं। जो 22 मार्च को रिलीज होगी। रणदीप हुड्डा भी इसमें नजर आएंगे। पहली बार अंकिता एक्टर रणदीप हुड्डा के साथ पर्दे पर नजर आने वाली है। फिल्म रिलीज होने से पहले अभिनेत्री के लुक की खूब तारीफ हो रही है। लोग उनके किरदार को पसंद कर रहे हैं। बाकी कलाकारों को शायद आदत होगी,

लेकिन मैं तो अपने पोस्टर को देखकर हर बार खुश होती हूं। मेहनत करने के बाद बड़े से पोस्टर या 70 एमएम के पर्दे पर खुद को देखने की खुशी अलग है। अंकिता कहती हैं- 'आप कहीं से भी आए हों, अपना रास्ता खुद बनाना पड़ता है। जब इस इंडस्ट्री में आई थी तो सोचा था कि किस तरह खुद को प्रस्तुत करना है। मेरा आत्मविश्वास हमेशा से मजबूत रहा है। जब अभिनय में आई तो मैं ऐसे पात्र निभाना चाहती थीं जो दूसरों के लिए प्रेरणा बन सकें। भाग्य अच्छा है कि वैसे ही रोल ऑफर भी होते हैं, फिर चाहे मणिकर्णिका द क्वीन ऑफ झांसी फिल्म हो या पवित्र रिश्ता शो। जब इस तरह के रोल निभाती हूं तो सशक्त महसूस करती हूं।' इंडस्ट्री में बाहर से आने वाले कलाकारों को अंकिता सलाह देती हैं कि जब कोई काम करें तो असमंजस में न रहें कि यह भी चाहिए, वो भी चाहिए। यह चकाचौंध वाली दुनिया है, आपको असमंजस में डाल सकती है। जब आप आश्वस्त होते हैं तो अपना रास्ता स्वयं तलाश लेते हैं।हर साल अंकिता और उनके पति विक्की जैन होली पर पार्टी देते है। इस बार उन्होंने कुछ अलग सोचा है। अंकिता कहती हैं कि होली बड़ा त्योहार है। मेरे लिए इसके मायने बहुत हैं पर चूंकि पापा के देहांत को एक साल नहीं हुआ है तो इस बार हम होली पर बड़ी पार्टी नहीं करेंगे।

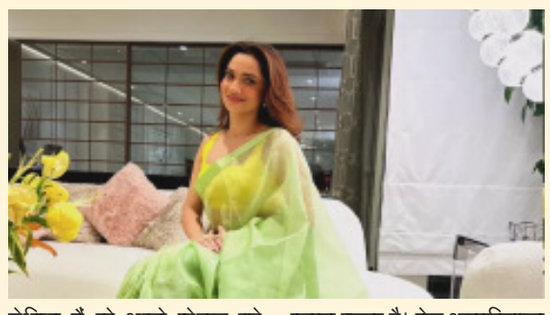

बॉबी देओल ने गरीब बच्चों को दिए 500 रुपये के नोट, फैंस बोले- 'असली लॉर्ड बॉबी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। हिंदी सिनेमा के मंजे हुए कलाकार बॉबी देओल ने बीते साल फिल्म एनिमल से हिंदी सिनेमा में धमाकेदार वापसी करने वालेँ दंब् अदत् आए दिन सुखिर्यों में छाए हुए रहते 500 के नोट देते हुए दिख रहे हैं। इस वीडियो में देखा जा रहा है कि बॉबी देओल (ँदंब् अदत) दो गरीब बच्चों

फिल्म एनिमल के जरिए जोरदार कमबैक किया है। इस फिल्म की अपार सफलता के बाद के बॉबी को लेकर अक्सर सुखिर्यां बनी रहती हैं। इस बीच सोशल मीडिया पर अभिनेता का एक लेटेस्ट वीडियो सामने आया है। हैं। हाल ही में एक्टर की अपकमिंग फिल्म कंगुवा का खतरनाक टीजर भी रिलीज किया गया है। इस बीच सोशल मीडिया पर बॉबी देओल का एक लेटेस्ट वीडियो सामने आया है। जिसमें वह गरीब बच्चों को 500-को 500-500 रुपये देते हुए दिखाई दे रहे हैं। आलम ये है कि उनका ये लेटेस्ट वीडियो अब तेजी से वायरल हो रही है। साथ ही फैंस भी उनके वीडियो पर जमकर लाइक और कमेंट भी कर रहे हैं। अपनी सादगी और दरियादिली को लेकर बॉबी देओल को काफी जाना जाता है। ऐसे में उनका ये लेटेस्ट वीडियो इस बात का पक्का सबूत है। सेलेब्स फोटोग्राफर पल्लुव पालीवाल ने आज बॉबी का एक लेटेस्ट वीडियो अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम हैंडल पर शेयर किया है। इस वीडियो में आप देख सकते हैं कि बॉबी दो गरीब बच्चों से घिरे हुए दिखाई दे रहे हैं, जो उनसे कुछ पैसे मांगते हुए दिखे रहे हैं। इस दौरान अभिनेता अपनी जेब से 500-500 रुपये के नोट को निकालते हैं और इन दोनों छोटे बच्चों को देते हैं, जिसके बाद उनके चेहरे पर खुशी देखते ही बनती है। सिर्फ इतना ही नहीं बॉबी देओल ने इन दोनों बच्चों के साथ तस्वीरें भी क्लिक कराई। इस वीडियो पर फैंस कमेंट कर एक्टर को असली लॉर्ड बॉबी जैसे खिताब दे रहे हैं और उनकी जमकर तारीफ कर रहे हैं। डायरेक्टर संदीप रेड्डी वांगा की फिल्म एनिमल के बाद आने वाले समय में बॉबी देओल फिल्म कंगुवा में दिखेंगे। इस मूवी में उनके साथ साउथ सुपरस्टार सूर्या मौजूद हैं। हाल ही में कंगुवा का धमाकेदार टीजर भी रिलीज किया गया है, जिसे देख साउथ की इस फिल्म के लिए फैंस की एक्साइटमेंट बढ़ गई है।

तनाव 2 की शूटिंग हुई पोस्टपोन, मानव विज ने कहा- 'अब होली पर झाड़ू-बर्तन सब मुझे ही करना

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
मुंबई। होली का उत्सव तो परिवार और प्रियजनों के साथ ही होता है। मानव विज अभिनीत वेब शो तनाव 2 की शूटिंग होली के आसपास होने वाली थी, पर अब इस वजह से उनकी होली का रंग फीका नहीं होगा। का त्योहार है और सेलिब्रिटीज काम से फुरसत पाकर यह त्योहार अपने परिवार के साथ मनाने की प्लानिंग कर रहे हैं। किस्मत से मानव विज भी इस साल अपने परिवार के साथ होली मनाने वाले हैं। पहले वह अपनी आगामी वेब सीरीज तनाव 2 की शूटिंग के चलते होली नहीं सेलिब्रेट करने वाले थे लेकन अब शूट पोस्टपोन हो गई है। मानव विज कहते हैं, तनाव 2 की शूटिंग की तारीखों में बदलाव हो रहा है तो होली घर पर मनेगी। त्योहार है तो घर पर पकवान बनते हैं। लोग घर पर आते हैं, खाना-पीना और गपशप चलती रहती है। मुझे रंगों से एलर्जी

हो जाती है, इसलिए बाहर जाकर होली खेलने से बचता हूं। (हंसते हुए) अब उम्र का भी तो ध्यान रखना पड़ता है। मानव विज ने कहा, ठएक वक्त था, जब कीचड़ में होली खेला करते थे, दूसरों को भी उसी में खींच लिया करते थे। अब रंग चढ़ जाए तो छींक आ जाती है।ठ होली पर मानव के ऊपर घर की बड़ी जिम्मेदारियां होती हैं। वह बताते हैं, ठघर की महिलाएं नारी सशक्तीकरण का नारा लगाकर निकल जाती हैं। होली मनाने के बाद घर की साफ-सफाई से लेकर खाने के बर्तन और झाड़ू तक सब मुझे ही करना होता है। मानव ने कहा, ठमुझे तो घर के कारपेट को लेकर डर लग रहा है कि रंगों से गंदा न हो जाए। उसको साफ करना बड़ा कठिन होता है। इंडस्ट्री वाले सपने बेचते हैं, लेकिन घर पर हम आम व्यक्ति की तरह पूरे उल्लास के साथ त्योहार मनाते हैं। साल 2022 में रिलीज हुई तनाव को लेकर खूब चर्चा हुई थी। फौदा से ली गई हिंदी संस्करण तनाव में मानव विज लीड रोल में थे। अरबाज खान, साहिबा बाली, एकता कौल, सुमित कौल और शशांक अरोड़ा ने भी मुख्य भूमिका निभाई थी। मानव विज स्टारर सीरीज का दूसरा सीजन जल्द ही ओटीटी प्लेटफॉर्म सोनी लिव पर दस्तक देगी।

सालों बाद बॉलीवुड के पर्दे पर नजर आएंगी प्रियंका चोपड़ा इस मशहूर डायरेक्टर संग करेंगी काम

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। प्रियंका चोपड़ा इन दिनों इस खबर के बाद देसी गर्ल के इंडियन फैंस काफी खुश नजर आ रहे हैं। कॉस्ट्यूम तय करने के लिए भंसाली से मिल रही हैं।'' प्रियंका

अपने पूरे परिवार के साथ भारत में हैं। बुधवार को प्रियंका पति निक जोनस, बेटी मालती और मां मधु चोपड़ा के साथ राम मंदिर के दर्शन करने अयोध्या पहुंचीं थी। वहीं अब एक्ट्रेस को लेकर एक बड़ी खबर सामने आ रही है।देसी गर्ल प्रियंका चोपड़ा ज्ल्द बॉलीवड की फिल्म में नजर आ सकती हैं। बता दें प्रियंका आखिरी बाद द व्हाइट टाइगर में नजर आई थी। जो साल 2021 में रिलीज हुई थी। ऐसे में उनकी बॉलीवुड फिल्म में सालों बाद काम करना उनके फैंस के लिए खुशी की खबर है। बुधवार को प्रियंका राम मंदिर के दर्शन करने अयोध्या पहुंचीं थी। कहा जा रहा है कि देसी गर्ल जल्द बॉलीवड की फिल्म में नजर आ सकती हैं। बता दें, प्रियंका आखिरी बाद द व्हाइट टाइगर में नजर आई थी। जो साल 2021 में रिलीज हुई थी। हिंदुस्तान टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक, प्रियंका चोपड़ा बॉलीवुड के मशहूर डायरेक्टर संजय लीला भंसाली के अगले प्रोजेक्ट का हिस्सा हो सकती हैं। वह इन दिनों कई स्क्रिप्ट्स पर काम कर रही हैं और एक प्रोजेक्ट को अंतिम रूप देने के लिए फिल्म निर्माता संजय लीला भंसाली से भी मिल रही हैं। दरअसल, वह एक अलग दौर की पृष्ठभूमि पर आधारित एक एक्शन प्रोजेक्ट के लिए संजय लीला भंसाली से भी मिल रही हैं। उन्हें यह प्रोजेक्ट पसंद आया है और अब वह टाइमलाइन, शेड्यूल और के लिए ये भारत यात्रा पूरी तरह से काम के लिए है। मुंबई में कार्यक्रम में शामिल होने के साथ-साथ उनके पास कई और प्रोजेक्ट्स भी हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, अलग-अलग क्षमताओं में उनकी लगातार मीटिंग्स हो रही हैं।'' इसके अलावा एक प्रोडक्शन हाउस भी है और उन्होंने उसी पर कुछ ध्यान केंद्रित करने का फैसला किया है। वह अपने बैनर तले तीन या चार अगली परियोजनाओं को अंतिम रूप देने के लिए लोगों से मिल रही हैं। वह कई स्क्रिप्ट्स पर काम कर रही हैं और उस पर निर्णय लेने के लिए कई निर्माताओं से मिल रही हैं।

मेगन फॉक्स ने अपनी प्लास्टिक सर्जरी पर की खुलकर बात, बोलीं 'तीन बार करवाई ब्रेस्ट सर्जरी'

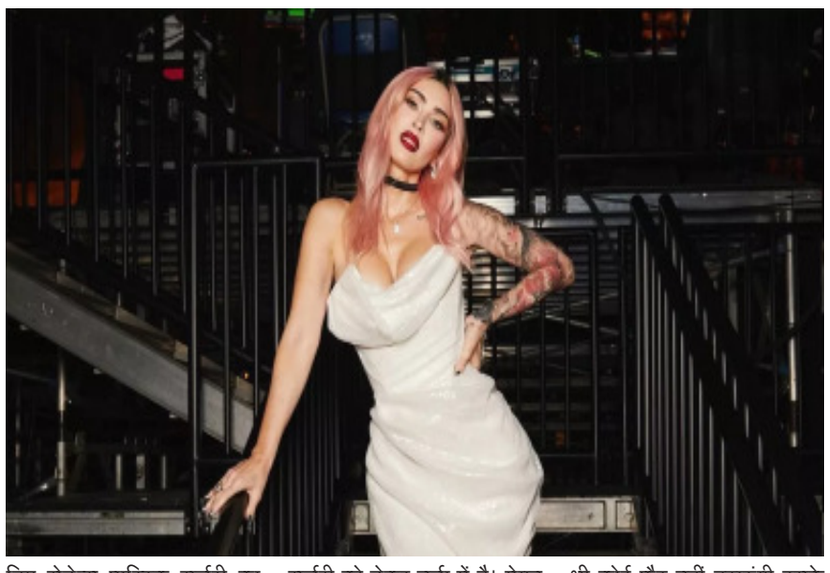

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। अक्सर देखा जाता है कि फिल्मों में खूबसूरत दिखने के पॉडकास्ट में अपनी कुछ प्लास्टिक सर्जरी की पुष्टि की है । इन दिनों हॉलीवुड एक्ट्रेस मेगन फॉक्स अपनी कॉन्टूरिंग या ऐसा कुछ नहीं करवाया है। मैंने कभी भी अपने चेहरे से फैट को नहीं हटवाया है। मैं कभी

लिए सेलेब्स प्लास्टिक सर्जरी का सहारा लेते हैं। आज के समय में अपने शरीर के किसी भी अंग की प्लास्टिक सर्जरी कराना बहुत आसान हो गया है। इसमें सबसे ज्यादा देश और विदेशी एक्ट्रेसेज शामिल हैं। आए दिन किसी न किसी एक्ट्रेस की सर्जरी की खबर सामने आती है। अमेरिकन एक्ट्रेस मेगन फॉक्स को लेकर अक्सर कहा जाता है कि उन्होंने अपने शरीर के कई अंगों की सर्जरी करवाई हुई है । अब इन सवालों और आरोपों को लेकर एक्ट्रेस ने खुलकर बात की है । मेगन फॉक्स ने कॉल हर डैडी सर्जरी को लेकर चर्चा में है। मेगन फॉक्स ने खूबसूरत दिखने के लिए अब तक अपने शरीर के कई अंगों की सर्जरी करवाई है। इसपर उन्होंने खुलकर बात की है। मेगन फॉक्स को लेकर अक्सर कहा जाता है कि उन्होंने अपने शरीर के कई अंगों की सर्जरी करवाई हुई है। अब इन सवालों और आरोपों को लेकर एक्ट्रेस ने खुलकर बात की है। मेगन फॉक्स ने 'कॉल हर डैडी' पॉडकास्ट में अपनी कुछ प्लास्टिक सर्जरी की पुष्टि की है बाकी का खंडन भी किया है। उन्होंने कहा कि, ठमैंने कभी भी कोई लिपोसक्शन या बॉडी भी कोई फैट नहीं हटाऊंगी इसके अलावा एक्ट्रेस ने अपनी नाक की सर्जरी के बारे में भी खुलकर बात की है। उन्होंने माना की जब वह 20 साल की उम्र में थी तो उन्होंने राइनोप्लास्टी (नाक की सर्जरी) कराई थी। जो उनके चेहरे पर की गई एकमात्र सर्जरी थी। इसके अलावा एक्ट्रेस ने अपनी ब्रेस्ट सर्जरी को लेकर भी खुलकर बात की। उन्होंने आगे कहा, ठजब मैं 21 या 22 साल की थी तब मैंने अपनी ब्रेस्ट की सर्जरी करवाई थी। मां बनने के बाद और बच्चों को ब्रेस्टफीडिंग कराने के बाद एक्ट्रेस ने फिर से सर्जरी करवाई थी।

परम वीर चक्र विजेता अब्दुल हमीद पर फिल्म लाएंगे 'र्ष्र्ब्छ्र्ि व' के निर्माता, 35 साल पहले बना था टीवी शो

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। भारतीय सिनेमा में भारत-पाक युद्ध से जांबाजी और बलिदान की कई दिलचस्प कहानियां निकली हैं। 1971 के युद्ध की पृष्ठभूमि पर तमाम फिल्में बनी हैं, मगर 1965 पाकिस्तानी सेना के दांत खट्टे कर दिये थे। इस फिल्म के निर्माताओं में अब्दुल हमीद के बेटे और पूर्व फौजी जैनुल हसन भी शामिल होंगे। फिल्म का निर्माण विक्रम खाखर और लेखक डॉ. रामाचंद्रन श्रीनिवासन

के भारत-पाक युद्ध पर आधारित कम ही कहानियां पर्दे पर उतरी हैं।भारत-पाक के बीच हुए युद्धों से पराक्रम की कई कहानियां निकली हैं। ऐसी ही एक कहानी है अब्दुल हमीद की जिन्हें 1965 की लड़ाई में असाधारण पराक्रम दिखाने के लिए परम वीर चक्र से सम्मानित किया गया था। फिल्म हमीद की बायोपिक बुक मेरे पापा परम वीर पर आधारित होगी। निर्माण की कमान उनके बेटे जैनुल हसन ने सम्भाली है।अब इस जंग की एक ऐसी कहानी पर फिल्म बनने वाली है, जो पराक्रम की अमिट गाथा दिखाती है। यह कहानी है सेना के सर्वोच्च सम्मान परमवीर चक्र पदक विजेता अब्दुल हमी की, जिन्होंने अपनी बहादुरी से कर रहे हैं, जिन्होंने अब्दुल हमीद पर किताब लिखी है। फिल्म के निर्माण के लिए व्यापक रिसर्च की गई है, ताकि वास्तविकता बनी रहे। जैनुल हसन ने फिल्म को लेकर कहा कि वो काफी अर्से से अपने पिता की कहानी को पर्दे पर दिखाना चाहते थे। उनकी बहादुरी और समर्पण आने पीढियों के लिए प्रेरणा से कम नहीं।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा. दीपक अरोरा द्वारा
श्री आधुनिक प्रिन्टर्स एण्ड पैकेजर्स प्रा.लि.
1-मिर्जापुर रोड नैनी प्रयागराज उ.प्र. 211008 से मुद्रित एवं
आधुनिक समाचार पब्लिसिंग हाउस सी 41 यूपीएसआईडीसी नैनी प्रयागराज 211010 (उ.प्र.) से प्रकाशित
सम्पादक/प्रकाशक
डा. पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2012/41154
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।

'मैदान' के बाद अजय देवगन के हाथ लगी एक और बायोपिक, इस शख्स की कहानी बताएंगे एक्टर

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
मुंबई। साल 2024 अजय देवगन के लिए बेहतरीन होने वाला है। इस साल उनकी कई मूवी रिलीज होने वाली हैं। इसी में से एक है 'मैदान'। फिल्म मैदान एक बायोपिक है, जिसमें अभिनेता फुटबॉल के आर्किटेक्ट कहे जाने वाले सैयद अब्दुल रहीम का किरदार निभा रहे हैं। बॉलीवुड अभिनेता अजय देवगन इन दिनों अपनी आने वाली फिल्म मैदान को लेकर सुखिर्यों में बने हुए हैं। उनकी यह फिल्म एक बायोपिक है जो जल्द ही रिलीज होने वाली है। अब ऐसा बताया जा रहा है कि मैदान के बाद अभिनेता के हाथ एक और स्पोर्ट्स बायोपिक लगी है। इस फिल्म में वह क्रिकेटर बालू की भूमिका निभा सकते हैं। इस फिल्म के बाद अजय एक और स्पोर्ट्स बायोपिक में काम करते हुए नजर आ सकते हैं। हालांकि, इसकी अभी आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है और न ही फिल्म के लिए अभी निर्देशक का चयन हुआ है। कुछ नायकों की उपलब्धियां कई बार इतिहास में दबकर रह जाती हैं। क्रिकेटर पालवंकर बालू भी उन्हीं में शामिल हैं। साल 2002 में आई पुस्तक 'ए कार्नर आफ ए फारेन फील्ड : द इंडियन हिस्ट्री आफ अ ब्रिटिश स्पोर्ट' में इतिहासकार रामचंद्र गुहा ने दलित समाज से आने वाले देश के पहले क्रिकेटर बालू पर प्रकाश डाला था। अब निर्माता अजय देवगन, तिग्मांशु धूलिया और प्रीति विनय सिन्हा इस खिलाड़ी पर फिल्म बनाने की तैयारी में हैं, जिन्होंने जातिगत भेदभाव पर विजय पाकर मैदान पर अपनी सही जगह हासिल की थी। पुणे में क्रिकेट क्लब में ग्राउंड्समैन (मैदान की देखभाल करने वाला) के रूप में शुरुआत करने वाले बालू 1896 में बाम्बे (अब मुंबई) आए और उन्हें हिंदू जिमखाना के लिए खेलने के लिए चुना गया। आज उन्हें दिग्गज भारतीय क्रिकेटरों में गिना जाता है।